गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 190
दि. 11.11.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

दिल्ली लाल किले के पास जोरदार विस्फोट 8 की मौत, राजधानी में दहशत का माहौल

(जीएनएस)। दिल्ली की राजधानी आज एक भयावह और हादसात्मक घटना की गवाह बनी, जब लाल किले के पास खड़ी एक कार में जोरदार धमाका हुआ। इस धमाके के बाद कार में अचानक आग भड़क उठी, जिसने पास खड़ी दो अन्य कारों को भी अपनी चपेट में ले लिया और वे पूरी तरह जलकर खाक हो गईं। इस भयानक हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई और कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए। घायलों को तुरंत एलएनजेपी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है। राजधानी में हुए इस धमाके ने स्थानीय नागरिकों के साथ-साथ पूरे देश में दहशत और भय का माहौल पैदा कर दिया। घटना लाल किले मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर-1 के पास हुई, जो शाम के समय हमेशा भीड़भाड़ वाला इलाका माना जाता है। धमाके की तीव्रता इतनी अधिक थी कि आसपास के घर हिल गए और पास की दुकानों के शीशे टूट गए। धमाके की आवाज इतनी जोरदार थी कि आसपास के लोग तुरंत बाहर भाग खड़े हुए और कई ने अपनी जान बचाने के लिए आसपास के सुरक्षित स्थानों की ओर दौड़ लगाई। दिल्ली निवासी राजधर पांडे ने बताया कि उन्होंने अपने घर की खिड़कियों से आग की लपटें देखीं और तुरंत नीचे आकर देखा कि धमाके की वजह से कार और उसकी जद में आई अन्य वाहन आग की भट्टी में बदल चुकी थीं। उनका कहना था कि यह दृश्य देखकर हर किसी की सांसे थम सी गईं और लोग अफरातफरी में भाग रहे थे।

धमाके का मंजर और आग का तांडव

दिल्ली की राजधानी आज एक भयावह हादसे की गवाह बनी जब लाल किले के पास खड़ी एक कार में जोरदार धमाका हुआ। धमाके की तीव्रता इतनी अधिक थी कि इलाके में हाहाकार मच गया। धमाके के तुरंत बाद कार में भीषण आग लग गई और पास खड़ी दो अन्य कारें भी आग की चपेट में आ गईं। यह दृश्य इतना भयानक था कि आसपास के लोग दहशत में भाग खड़े हुए। इस हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई और कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए। घायलों को तुरंत एलएनजेपी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है।

घटना का स्थल और प्रारंभिक जानकारी

यह हादसा लाल किले मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर-1 के पास हुआ, जो शाम के समय हमेशा भीड़भाड़ वाला इलाका माना जाता है। धमाके की आवाज इतनी जोरदार थी कि आसपास के घर हिल गए और दुकानों के शीशे टूट गए। राजधानी दिल्ली में यह धमाका न केवल एक स्थानीय हादसा बल्कि सुरक्षा के लिहाज से भी गंभीर चेतावनी बन गया है। दिल्ली निवासी राजधर पांडे ने बताया कि उन्होंने अपने घर की खिड़कियों से आग की लपटें देखीं और तुरंत नीचे आकर देखा कि कार और आसपास की अन्य वाहन पूरी तरह जल चुके थे। उनके मुताबिक घटना इतनी अचानक हुई कि लोग कुछ समझ पाते, उससे पहले ही आग और धमाके ने पूरे इलाके को अपनी चपेट में ले लिया। मौके पर फायर ब्रिगेड और दिल्ली पुलिस की कई टीमें तुरंत पहुंच गईं। फायर डिपार्टमेंट के अधिकारियों ने बताया कि धमाके के बाद तीन से चार अन्य वाहनों में भी आग फैल गई और उन्हें नुकसान पहुंचा। आग बुझाने और लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने का कार्य तुरंत शुरू कर दिया गया। पुलिस ने इलाके को घेर लिया और लोगों से अपील की कि वह घटनास्थल के पास न जाएं ताकि राहत एवं बचाव कार्य में बाधा न आए। अधिकारियों का कहना है कि धमाके के कारणों का पता लगाने के लिए हर पहलू से जांच की जा रही है। शुरुआती अनुमान है कि यह विस्फोट कार में सीएनजी लीक होने या किसी तकनीकी खराबी के कारण हुआ हो सकता है। हालांकि इसकी पुष्टि अभी नहीं हो पाई है। इस हादसे ने सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी चेतावनी का काम किया है और यह दिखा दिया कि राजधानी के व्यस्त और ऐतिहासिक इलाकों में सुरक्षा का कड़ा इंतजाम होना आवश्यक है। घटना के बाद पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। लोग अपने घरों से बाहर निकलकर स्थिति देखने की कोशिश कर रहे थे।

केरल में दिसंबर में दो चरणों में होंगे स्थानीय निकाय चुनाव, 9 और 11 दिसंबर को मतदान, 13 दिसंबर को मतगणना

(जीएनएस)। तिरुवनंतपुरम। केरल में लोकतंत्र का अगला बड़ा उत्सव दिसंबर में देखने को मिलेगा, जब राज्य के 14 जिलों में दो चरणों में स्थानीय निकाय चुनाव कराए जाएंगे। राज्य निर्वाचन आयोग ने सोमवार को इसकी आधिकारिक घोषणा करते हुए मतदान की तारीखें 9 और 11 दिसंबर तय की हैं। चुनाव आयोग के अनुसार, इस बार कुल 1,199 स्थानीय निकायों में मतदान होगा और लगभग 2.84 करोड़ मतदाता अपने प्रतिनिधि चुनेंगे।

निर्वाचन आयुक्त ए. शाजहान ने बताया कि पहले चरण का मतदान 9 दिसंबर को होगा, जिसमें तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, पथानमथिट्टा, कोट्टायम, अलप्पुझा, इदुक्की और एर्नाकुलम जिले शामिल रहेंगे। मतदान सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक चलेगा। दूसरे चरण का मतदान 11 दिसंबर को होगा, जिसमें त्रिशूर, पलक्कड़, मलप्पुरम, वायनाड, कोझिकोड, कन्नूर और कासरगोड जिलों के मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। सभी जिलों की मतगणना 13 दिसंबर को की जाएगी।

चुनाव कार्यक्रम के अनुसार, नामांकन

दाखिल करने की अंतिम तिथि 21 नवंबर, नामांकन पत्रों की जांच 22 नवंबर को और नाम वापस लेने की आखिरी तिथि 24 नवंबर तय की गई है। इसके साथ ही राज्यभर में आदर्श आचार संहिता तुरंत प्रभाव से लागू कर दी गई है।

निर्वाचन आयोग ने बताया कि चुनाव राज्य के 1,200 में से 1,199 स्थानीय निकायों में होंगे, क्योंकि मत्तनूर नगरपालिका परिषद का कार्यकाल वर्ष 2027 तक वैध है। इन चुनावों में 941 ग्राम पंचायतें, 152 ब्लॉक पंचायतें, 14 जिला पंचायतें, 86 नगरपालिकाएं और छह नगर निगम शामिल होंगे। इस दौरान 23,512 वार्डों के लिए 33,746 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। आयोग ने बताया कि कुल 2,84,30,761 मतदाता, जिनमें 2,841 प्रवासी भारतीय मतदाता भी शामिल हैं, इस चुनाव में हिस्सा लेंगे।

राज्य निर्वाचन अधिकारी शाजहान ने बताया कि आयोग ने मतदान प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए व्यापक इंतज़ाम किए हैं। चुनावी जिलों में पुलिस बल की तैनाती बढ़ाई जाएगी और मतदान केंद्रों पर सीसीटीवी निगरानी, वेबकास्टिंग और वीडियो रिकॉर्डिंग की व्यवस्था होगी। वहीं, प्रवासी भारतीय मतदाताओं के लिए भी आयोग ने विशेष सुविधा का प्रावधान किया है ताकि वे अपने गृह जिले के स्थानीय निकायों के चुनाव में भाग ले सकें।

राजनीतिक दृष्टि से यह चुनाव बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह राज्य में एलडीएफ और यूडीएफ गठबंधन के बीच जनता के मूड का संकेत देगा। पिछले चुनाव में वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) ने अधिकांश पंचायतों और नगर निगमों पर कब्जा जमाया था। इस बार दोनों गठबंधन चुनावी समीकरणों और स्थानीय मुद्दों के आधार पर जनता को अपने पक्ष में करने की कोशिश में जुटे हुए हैं।

राज्य निर्वाचन आयोग ने सभी राजनीतिक दलों से अपील की है कि वे आचार संहिता का सख्ती से पालन करें, बिना किसी भड़काऊ बयानबाजी या सार्वजनिक धन के दुरुपयोग के प्रचार करें। आयोग ने स्पष्ट कहा कि किसी भी तरह की आचार संहिता के उल्लंघन पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी।

आधार अब आपकी जेब में — UIDAI ने नया 'Aadhaar' ऐप लॉन्च कर पहचान का डिजिटल युग तेज किया

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पहचान और वेरिफिकेशन की पारंपरिक राहों को आधिकारिक तौर पर डिजिटल प्रतिमान में बदलने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया (UIDAI) ने 10 नवंबर 2025 को नया Aadhaar App लॉन्च कर दिया है, जो अब एंड्रॉयड और आईओएस दोनों प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है। आधिकारिक बयान और मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक़ यह ऐप उपयोगकर्ताओं को अपने 12 अंकों के आधार को फोन में सुरक्षित रूप से रखने, साझा करने और नियंत्रण में रखने का विकल्प देता है, ताकि फिजिकल कार्ड साथ ले जाने की झंझट समाप्त हो सके।Gadgets 360+1

नया ऐप तकनीक और सुरक्षा की उन सुविधाओं से लैस है जिनकी मांग लंबे समय से उठती रही है। ऐप में फेस-आधारित वेरीफिकेशन जोड़ा गया है, यानी अब उपयोगकर्ता अपने चेहरे से ही सत्यापन करा सकते हैं; साथ ही क्यूआर-कोड से पहचान साझा करने, बायोमेट्रिक लॉक/अनलॉक की सुविधा और एक ही

डिवाइस पर परिवार के पाँच तक सदस्यों के आधार प्रोफाइल स्टोर करने का ऑप्शन मिलता है। UIDAI ने इसे पूरी तरह पर्ची-मुक्त और वैरिफायबल पहचान का प्लेटफ़ॉर्म बताया है, और रिपोर्टों में कहा गया है कि यह नया ऐप mAadhaar का स्थान नहीं लेगा बल्कि उससे अलग और उन्नत सुविधाएँ देगा।The Economic Times+1

अधिकारियों के अनुसार नया ऐप उपयोगकर्ता को यह तय करने की आज़ादी देता है कि किसे कौन-सी जानकारी दिखानी है — नाम और फोटो साझा करने के साथ आप पता, जन्मतिथि या अन्य संवेदनशील जानकारियाँ मास्क कर सकते हैं। ऐप उपयोग हिस्ट्री भी दिखाता है ताकि उपयोगकर्ता यह देख सके कि उसका आधार कहाँ और कब उपयोग हुआ। इससे पहचान की पारदर्शिता बढ़ेगी और अनधिकृत उपयोग पर निगरानी में मदद मिलेगी। विशेषज्ञों का कहना है कि क्यूआर-आधारित वेरिफिकेशन और फेस-ऑथेंटिकेशन के संयोजन से ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों जगह पेपरलेस सत्यापन की प्रक्रिया तेज और सुरक्षित बनेगी।The Financial Express+1

नए ऐप के आने से रोज़मर्रा के काम जैसे बैंक केवाईसी, मोबाइल सिम एक्टिवेशन, होटल चेक-इन और सरकारी सेवाओं के लिए पहचान सिद्ध करना मिनटों का काम बनने की संभावना है। UIDAI ने इसे खास तौर पर "completely paperless experience" कहकर पेश किया है और बताया है कि ऐप के जरिए साझा किए गए क्रेडेंशियल्स वेरिफायबल होंगे — यानी प्राप्तकर्ता ऐप के माध्यम से साझा किए गए डेटा की प्रमाणिकता तुरंत पुष्टि कर सकेगा। इससे न केवल सुविधा बढ़ेगी बल्कि पहचान की धोखाधड़ी रोकने में भी मदद मिलेगी।Gadgets 360+1

ऐप की सेट-अप प्रक्रिया भी सरल रखी गई है: प्ले-स्टोर या ऐप-स्टोर से डाउनलोड के बाद यूजर को भाषा चुनकर अपना 12 अंकों का आधार नंबर दर्ज करना होगा, रजिस्टर्ड मोबाइल पर ओटीपी आएगा और ओटीपी सत्यापन के बाद फेस ऑथेंटिकेशन पूरा कर के छह अंकों का पासकोड बनाना होगा।

देशभर में मतदाता सूची के पुनरीक्षण पर सुप्रीम कोर्ट में आज से होगी सुनवाई

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देशभर में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर सुप्रीम कोर्ट में आज से एक अहम कानूनी जंग शुरू होने जा रही है। चुनाव आयोग के इस फैसले को चुनौती देने वाली कई

याचिकाओं पर मंगलवार से सुनवाई आरंभ होगी। यह सुनवाई न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की द्विसदस्यीय पीठ के समक्ष होगी, जो फिलहाल इस पूरे मामले की प्रारंभिक सुनवाई कर रही है। अदालत में याचिकाकर्ताओं की दलील है कि चुनाव आयोग द्वारा जारी एसआईआर प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी है और कई राज्यों में मतदाता सूची से नामों की गलत तरीके से कटौती की गई है, जिससे नागरिकों के मताधिकार पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है।

पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा कि अभी वह केवल बिहार राज्य से संबंधित एसआईआर मामलों पर विचार कर रही है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने टिप्पणी की कि यदि अन्य राज्यों के मामलों को इस पीठ के समक्ष लाया जाना है, तो उन्हें भारत के मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई के समक्ष सूचीबद्ध करने का अनुरोध करना होगा। अदालत ने स्पष्ट किया कि वह इस प्रक्रिया की संवैधानिक वैधता, पारदर्शिता और नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा जैसे पहलुओं की गहराई से समीक्षा करेगी।

वहीं, चुनाव आयोग की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि एसआईआर एक नियमित और आवश्यक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य मतदाता सूचियों को अद्यतन रखना और फर्जी मतदान पर रोक लगाना है। आयोग ने दावा किया कि यह प्रक्रिया किसी भी व्यक्ति के अधिकारों का हनन नहीं करती और इसके तहत हर नागरिक को आपत्ति दर्ज कराने का पूरा अवसर दिया जाता है।

उधर, याचिकाकर्ताओं का कहना है कि बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, असम और झारखंड समेत कई राज्यों में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण के दौरान लाखों लोगों के नाम बिना उचित सूचना के हटा दिए गए हैं। इन याचिकाओं में यह भी कहा गया है कि चुनाव आयोग को इस प्रक्रिया को रोककर एक स्वतंत्र निगरानी समिति गठित करनी चाहिए, जो राज्यवार स्थिति का मूल्यांकन करे।

सुप्रीम कोर्ट ने संकेत दिया कि सुनवाई के दौरान यदि यह पाया गया कि एसआईआर प्रक्रिया में गंभीर त्रुटियां हैं, तो वह इस पर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी कर सकता है ताकि भविष्य में मतदाता सूची की विश्वसनीयता पर कोई सवाल न उठे। अदालत ने कहा कि मतदाता सूची लोकतंत्र की रीढ़ है और इसकी शुचिता पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए।

इस मामले में अब अगली सुनवाई मंगलवार दोपहर से शुरू होगी, जिसमें चुनाव आयोग और याचिकाकर्ताओं दोनों की ओर से विस्तृत तर्क रखे जाएंगे। यह सुनवाई देशभर के मतदाता पुनरीक्षण की प्रक्रिया के लिए एक मिसाल साबित हो सकती है।

सीमा की नई प्रहरी: दुर्गा ड्रोन स्क्वाड्रन संभालेगा आसमान, महिला जवान होंगी दुश्मन ड्रोन की सबसे बड़ी चुनौती

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की सीमाओं पर अब महिला शक्ति का नया आयाम दिखाई देगा। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने एक ऐतिहासिक पहल करते हुए अपनी पहली महिला ड्रोन इकाई — 'दुर्गा ड्रोन स्क्वाड्रन' — का गठन किया है। इस विशेष स्क्वाड्रन की महिला जवान न केवल सीमा पार से आने वाले घुसपैठियों पर नजर रखेंगी, बल्कि दुश्मन देशों द्वारा भेजे गए ड्रोन को हवा में ही निशाना बनाकर मार गिराने का सामर्थ्य भी रखती हैं। यह भारत की सीमाओं पर तकनीकी सुरक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

ग्वालियर स्थित 'स्कूल ऑफ ड्रोन वॉरफेयर' में इस स्क्वाड्रन को उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। महिला जवानों को अत्याधुनिक ड्रोन सिस्टम्स के संचालन, रियल-टाइम निगरानी, सेंसर डेटा एनालिसिस, और ड्रोन-टू-ड्रोन कॉम्बैट (हवाई युद्ध) की तकनीक सिखाई जा रही है। यह वही केंद्र है जहां बीएसएफ के अधिकारी अब आधुनिक युद्धक तकनीक की दिशा में अपने बल को नया स्वरूप दे रहे हैं। प्रशिक्षण के दौरान जवानों को यह भी सिखाया जा रहा है कि कैसे सीमावर्ती इलाकों में दुश्मन की गतिविधियों की पहचान कर त्वरित प्रतिक्रिया दी जाए।

बीएसएफ महानिदेशक दलजीत चौधरी के निर्देशन और अकादमी के निदेशक डॉ. शमशेर सिंह (आईपीएस, एडीजी) के नेतृत्व में शुरू किए गए इस कार्यक्रम को महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक अध्याय कहा जा रहा है। बीएसएफ अधिकारियों का कहना है कि आज का युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि तकनीक और बुद्धिमत्ता से लड़ा जा रहा है, और इस युद्ध में महिलाओं की स्वाभाविक विशेषताएं — धैर्य, सटीकता और दृढ़ता — उन्हें ड्रोन संचालन में विशेष रूप से उपयुक्त बनाती हैं।

इन महिला ड्रोन योद्धाओं को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि वे पाकिस्तान और बांग्लादेश से लगती सीमाओं पर आने वाले निगरानी ड्रोन, तस्करी ड्रोन और आतंकवादी आपूर्ति ड्रोन का पता लगाकर उन्हें तुरंत निष्क्रिय कर सकें। स्क्वाड्रन के अंतर्गत तैयार किए जा रहे इन ड्रोन ऑपरेटर्स को भविष्य में नाइट विज़न सेंसर और एआई-आधारित लक्ष्य पहचान तकनीक से भी सुसज्जित किया जाएगा।

बीएसएफ सूत्रों के अनुसार, यह पहल केवल सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य महिलाओं को तकनीक आधारित रक्षा तंत्र में अग्रणी भूमिका देना भी है। 'दुर्गा ड्रोन स्क्वाड्रन' का नाम देवी दुर्गा की शक्ति और साहस से प्रेरित है, जो विनाशक और रक्षक दोनों स्वरूपों की प्रतीक हैं। भविष्य में इस कार्यक्रम का विस्तार कर जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और पूर्वोत्तर राज्यों की सीमाओं तक महिला ड्रोन यूनिट्स की तैनाती की योजना है। यह न केवल देश की सुरक्षा को नए स्तर पर ले जाएगा, बल्कि भारतीय सीमाओं पर महिला शक्ति का नया अध्याय भी लिखेगा — जहाँ अब दुश्मन का सामना केवल बंदूक नहीं, बल्कि तकनीकी दक्षता और स्त्री-साहस करेगा।

संपादकीय

अस्वीकार्य हथकंडे

यह धारणा बना ली गई है कि हरियाणा में महिलाओं के खिलाफ ज्यादा अपराध होते रहे हैं। लेकिन हाल ही में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले कथित अपराधों से जुड़े झूठे मामलों में भी यह राज्य सबसे ऊपर है। जो कि एक गंभीर विरोधाभास को दर्शाता है। पुलिस आंकड़ों पर नजर डालें तो हरियाणा में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की लगभग 45 फीसदी शिकायतें झूठी पायी गई। जबकि गुरुग्राम में 2020 से 2024 के बीच चालीस प्रतिशत से अधिक बलात्कार के मामले जांच के बाद रद्द किए गए। निश्चित रूप से इन आंकड़ों से न केवल कानून प्रवर्तन एजेंसियों बल्कि नागरिक समाज को भी चिंतित होना चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि जब मनगढ़ंत शिकायतें सिस्टम में दर्ज की जाती हैं तो ये न केवल पुलिस का समय बर्बाद करती हैं, बल्कि इसके अलावा भी इसके कई तरह के नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। ये उन वास्तविक पीड़ितों की विश्वसनीयता को भी कमजोर करती हैं जो पहले से ही अपने खिलाफ खड़ी व्यवस्था में अपना मामला साबित करने के लिये संघर्ष कर रहे होते हैं। व्यक्तिगत बदला लेने, जबरन आर्थिक वसूली या ब्लैकमेल के लिये कानूनी प्रावधानों का दुरुपयोग दुर्भाग्यपूर्ण है। जैसा कि हाल ही में गुरुग्राम में एक वकील के नेतृत्व वाले गिरोह से जुड़े मामले में खुलासा हुआ। जाहिर है, इस तरह की करतूतें न्याय प्रक्रिया में जनता के विश्वास को कम ही करती हैं।

निस्संदेह, इस सामाजिक विद्रूपता का उत्तर सभी महिलाओं पर अविश्वास करने या उन्हें हिंसा की रिपोर्ट करने से हतोत्साहित करने में नहीं है। हर शिकायत को गंभीरता से लिया ही जाना चाहिए। लेकिन साथ ही जांच पेशवर तरीके से और प्रमाणिक साक्ष्य आधारित होनी चाहिए। इसके अलावा उतना ही महत्वपूर्ण उन लोगों को दंडित करना भी है जो जानबूझकर कानून का दुरुपयोग करते रहे हैं। निश्चित रूप से महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और न्याय की अखंडता परस्पर विरोधी लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि वे पूरी तरह एक-दूसरे पर ही निर्भर भी हैं। लेकिन प्रसंग के आलोक में सबसे बड़ी सामाजिक चिंता यह भी होनी चाहिए कि हरियाणा में लैंगिक संबंध इतने अस्थिर क्यों हो चले हैं कि यहां हिंसा और प्रतिशोध दोनों पनपते हैं? निर्विवाद रूप से शिक्षा, जागरूकता और लैंगिक संवेदनशीलता कमजोर कड़ियां बनी हुई हैं। सच्चा सशक्तीकरण कानूनों के हथियारीकरण से नहीं, बल्कि एक ऐसी संस्कृति से आएगा, जो निष्पक्षता, समानता और आपसी सम्मान को महत्व देती हो। झूठे आरोप न केवल आरोपी को बल्कि मामले की संवेदनशीलता को नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे में महिलाओं को न्याय सिर्फ सच्चाई या विश्वास की कीमत पर नहीं मिल सकेगा। ऐसे मामलों में समाज के जागरूक लोगों और महिला संगठनों को भी आवाज उठानी चाहिए। साथ ही उन लोगों को न्यायिक प्रक्रिया के जरिये दंडित किया जाना चाहिए, जो कानून की आड़ में निहित स्वार्थों को पूरा करना चाहते हैं।

उत्तराखंड नरेंद्र मोदी के हृदय में बसता है

“ वर्ष 2000 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा गठित यह राज्य पहाड़ी महिलाओं के अभूतपूर्व आंदोलन से गुजरा था। अटल जी ने ठीक ही कहा था कि इस राज्य का जन्म मां की शक्ति से हुआ है। मातृ-शक्ति ने नया राज्य बनाया, जिसमें बड़ी आकांक्षाएं और उम्मीदें थीं। हिमालयी राज्य की महिलाओं के सपनों को साकार करना बाकी है।

हिमालय में संन्यासी बनते-बनते से लेकर उत्तराखंड निर्माण की रजत जयंती समारोह के उद्घाटन तक, नरेंद्र मोदी ने अपने जीवन में एक पूरा हिमालय जी लिया है। गंगा-यमुना का प्रवाह उनकी आत्मा में है और उत्तराखंड जो आदि काल से वैदिक संस्कृति के लिए जाना जाता है, वही उनकी दृष्टि को दिशा देती है। राज्य के हर सुख-दुख में नरेंद्र मोदी इस हिमालयी राज्य के लोगों के साथ खड़े दिखे, तब भी जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे। उत्तराखंड ने जो भी आपदा झेली, नरेंद्र मोदी सबसे पहले मदद के लिए दौड़े और सभी जरूरी बचाव दल, सामग्री तथा राहत प्रदान की। वर्ष 2000 में दूरदर्शी प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा गठित यह राज्य पहाड़ी महिलाओं के अभूतपूर्व आंदोलन से गुजरा था। अटल जी ने ठीक ही कहा था कि इस राज्य का जन्म मां की शक्ति से हुआ है। मातृ-शक्ति ने नया राज्य बनाया, जिसमें बड़ी आकांक्षाएं और उम्मीदें थीं। हिमालयी राज्य की महिलाओं के सपनों को साकार करना बाकी है।

कुख्यात मुलायम सिंह यादव सरकार के दौरान कई लोगों ने अपनी जान गंवाई और महिलाओं पर क्रूर अत्याचार हुए। उत्तराखंड राज्य आंदोलन के कुछ प्रमुख मील के पत्थर इस प्रकार हैं:

- खटीमा गोलीकांड (1 सितंबर 1994): शांतिपूर्ण जुलूस पर पुलिस ने अंधाधुंध गोली चलाई, जिसमें कम से कम सात कार्यकर्ताओं की मौत हुई।
- मसूरी गोलीकांड (2 सितंबर 1994): खटीमा कांड के विरोध में निकले एक अन्य जुलूस पर पुलिस ने गोली चलाई, जिसमें छह लोगों की मौत हुई, जिनमें महिला कार्यकर्ता बेलमती चौहान और हंसा धनै शामिल थीं।
- रामपुर तिराहा गोलीकांड (2 अक्टूबर 1994): दिल्ली प्रदर्शन के लिए जा रहे कार्यकर्ताओं को रोका गया और गोली चलाई गई; कम से कम छह लोग मारे गए और कई महिलाओं के साथ कथित तौर पर बलात्कार व छेड़छाड़ हुई। इसे आंदोलन के इतिहास का “काल दिवस” माना जाता है।
- श्रीयंत्र टापू गोलीकांड (10 नवंबर 1994): भूख हड़ताल पर बैठे कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने क्रूर हमला किया, दो की मौत हुई और उनके शव अलकनंदा नदी में फेंक दिए गए।
- कारावास और यातनाएं: कई कार्यकर्ताओं, जिनमें प्रमुख व्यक्तित्व इंद्रमणि बदोनी (जिन्हें “पर्वत गांधी” कहा जाता है) शामिल हैं, को जेल में डाला गया और उपवास व प्रदर्शनों के दौरान शारीरिक यातना दी गई।

उत्तराखंड प्रतिभाशाली व्यक्तियों और साहसी, निडर लोगों का खजाना रहा है। तीन हजार वर्ष पूर्व कई राजाओं ने अश्वमेध यज्ञ जैसे वैदिक अनुष्ठानों के लिए इसी स्थान को चुना था। आज भी राज्य में दो प्राचीन स्थल एएसआई द्वारा राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर संरक्षित हैं। इनमें से एक श्येन चिति अश्वमेध स्थल (उड़ते गरुड़ के आकार में बना अश्वमेध यज्ञ) देहरादून में है और दूसरा, जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का है, पूरोला में। यमुना तट पर महाभारत कालीन शिव मंदिरों के लिए प्रसिद्ध लखामंडल क्षेत्र में कर्ण को समर्पित मंदिर है, जो शायद भारत में एकमात्र है। नौवीं शताब्दी में कत्यूरी राजाओं द्वारा निर्मित कटारमल सूर्य मंदिर 44 मंदिरों का समूह है, जिसे ओडिशा के कोणार्क जितना महत्वपूर्ण माना जाता है। कोई भी हिंदू अपनी जिंदगी को बिना बद्रीनाथ-केदारनाथ दर्शन के पूरा हुआ नहीं मानता। यहीं भगीरथ ने शिव से गंगा प्राप्त की और आदि शंकराचार्य ने गंगा व शिव की स्तुति में प्रसिद्ध भजन लिखे तथा अंत में हिमालय के केदारनाथ क्षेत्र में निर्वाण प्राप्त किया। अलकनंदा और भागीरथी के संगम पर स्वर्गिक सुंदर देव प्रयाग में गंगा को अपना नाम मिलता है। शिव-पार्वती की प्रिय भूमि, मां नंदा देवी हमारी पुत्री भी हैं, जिन्हें मां के रूप में पूजा जाता है और हर बारहवें वर्ष 22 दिनों में 280 किमी की भव्य नंदा राज जात (मां नंदा की राजकीय यात्रा) होती है। गंगा तट पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त योग नगरी ऋषिकेश और हरिद्वार महाकुंभ स्थल लाखों तीर्थयात्रियों व योग प्रेमियों को आकर्षित करते हैं। अविभाजित उत्तराखंड ने दो प्रसिद्ध मुख्यमंत्री दिए– गोविंद बल्लभ पंत और नारायण दत्त तिवारी तथा वर्तमान में भी राज्य के मुख्यमंत्री, जो देश को प्रधानमंत्री देने के लिए जाना जाता है, उत्तराखंड से हैं।

भारत की रक्षा सेनाएं उत्तराखंड के वीर योद्धाओं के बिना अधूरी हैं। ब्रिटिश काल में गब्बर सिंह नेगी और दरवान सिंह नेगी को विक्टोरिया क्रॉस से लेकर परम वीर चक्र प्राप्त मेजर धन सिंह थापा और अमर किंवदंती राइफलमैन जसवंत सिंह रावत तक, देश को सबसे अधिक सैनिक देने वाले इस राज्य के बहादुर देशभक्त योद्धाओं की लंबी सूची है। भारत के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत उत्तराखंड से थे और दूसरे जनरल अनिल चौहान भी। देश के सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल, पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल डी.के. जोशी तथा पीएमओ व वैज्ञानिक संस्थानों में कई उच्च पदाधिकारी इसी राज्य से हैं। इस राज्य ने दुनिया को जो किंवदंतियां दी हैं, उन्हें नाम देना कठिन, यदि असंभव नहीं – नवीनतम महिला क्रिकेट सनसनी स्नेह राणा से लेकर प्रथम एवरेस्ट विजेता बछेंद्री पाल, ताशी और नुंगशी मलिक, अभिनव बिंद्रा, ऋषभ पंत, रस्किन बॉन्ड, नरेंद्र सिंह नेगी, बसंती बिष्ट यह मां भारत की गौरव और सितारों की अनंत सूची है। गंगा तट से योग और आयुर्वेद को ध्रुवों तक ले जाने वाले बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण, गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देने वाले महर्षि महेश योगी, प्रकृति के शाश्वत कवि सुमित्रानंदन पंत से लेकर हिंदू धर्म और सभ्यता के पुनर्जागरणकर्ता स्वामी रामतीर्थ और स्वामी विवेकानंद तक, सभी ने इस भूमि से गर्मजोशी और प्रेरणा पाई है। हमारे अपने समय में बाबा नीब करौरी, कैंची धाम – स्टीव जॉब्स के गुरु – ने इस हिमालयी राज्य की आभा को बढ़ाया है। देहरादून शहर स्वयं सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक और रक्षा संस्थानों, ज्ञान और विज्ञान के केंद्रों का घर है – ओएनजीसी, नौसेना हाइड्रोग्राफी, सर्वे ऑफ इंडिया, वन अनुसंधान संस्थान, इंडियन मिलिट्री एकेडमी और राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज का मुख्यालय यहीं है।

उत्तराखंड की रजत जयंती समारोह 9 नवंबर से शुरू हो रहा है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्य की महानता और गौरवशाली विरासत को नमन कर रहे हैं तथा लोगों के लिए नया, बेहतर, समृद्ध भविष्य बना रहे हैं। उनके उपहार अद्भुत हैं और उत्तराखंड को भारत का सबसे विकसित राज्य बनाने, इसे मजबूत देव भूमि और वीर भूमि बनाने में बहुत दूर तक जाएंगे।

वे पेयजल, सिंचाई, तकनीकी शिक्षा, ऊर्जा, शहरी विकास, खेल और कौशल विकास जैसे प्रमुख क्षेत्रों में 8140 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास कर रहे हैं। वे पीएम फसल बीमा योजना के तहत 28,000 से अधिक किसानों के खातों में सीधे 62 करोड़ रुपये भी जारी कर रहे हैं। रजत जयंती कार्यक्रम के दौरान श्री मोदी 930 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन और 7210 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे।

प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित होने वाली परियोजनाओं में अमृत योजना के तहत देहरादून के 23 जोन में जलापूर्ति कवरेज, पिथौरागढ़ जिले में विद्युत सबस्टेशन, सरकारी भवनों में सौर ऊर्जा संयंत्र, नैनीताल के हल्द्वानी स्टेडियम में एस्ट्रोटर्फ हॉकी मैदान आदि शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी दो प्रमुख जल-विद्युत परियोजनाओं का शिलान्यास भी कर रहे हैं – सोंग डैम पेयजल परियोजना जो देहरादून को 150 एमएलडी (मिलियन लीटर प्रतिदिन) पेयजल उपलब्ध कराएगी और नैनीताल में जमरानी डैम बहुउद्देशीय परियोजना, जो पेयजल, सिंचाई और विद्युत उत्पादन में सहयोग देगी। अन्य परियोजनाओं जिनका शिलान्यास होगा उनमें विद्युत सबस्टेशन, चंपावत में महिला खेल कॉलेज की स्थापना, नैनीताल में अत्याधुनिक डेयरी प्लांट आदि शामिल हैं।

निश्चित रूप से उत्तराखंड के सबसे अच्छे दिन आ रहे हैं और इसका एकमात्र कारण यह है कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जीवन में एक उत्तराखंड बसता है।

प्रेरणा

गोपीनाथ की खीर : जब भगवान प्रेम में चोर बन गए

वृंदावन की पवित्र भूमि पर एक संत रहते थे, जिनका नाम था माधवदास। वे उन विरक्त आत्माओं में से थे जिन्होंने संसार के समस्त बंधनों को त्यागकर अपने जीवन का हर क्षण भगवान के नाम को समर्पित कर दिया था। उनकी भक्ति में आडंबर नहीं था, केवल निष्कपट प्रेम था। वे न किसी से कुछ माँगते थे, न किसी से कुछ अपेक्षा रखते थे। उनका जीवन बस प्रभु के नाम की रागिनी में बहता एक मधुर स्वर था।

एक दिन उनके मन में एक अद्भुत इच्छा जागी — “अब वृंदावन के इन कुंजों से आगे बढ़ना चाहिए, उस स्थान पर जहाँ भगवान स्वयं अपने भक्तों के साथ रहते हैं, उन्हें भोजन कराते हैं और उनके सुख-दुःख में सहभागी होते हैं। वह स्थान है जगन्नाथ पुरी।” इस भाव ने उनके भीतर एक तीव्र संकल्प जगा दिया। बिना किसी साथी, बिना किसी साधन के वे पैदल यात्रा पर निकल पड़े। सूर्य की तपती किरणें, बरसते बादल, काँटों भरे रास्ते — कुछ भी उन्हें रोक न सका। उनके पैरों में छाले पड़े, फिर भी उनके हृदय में केवल एक ही स्वर गूँजता रहा — “जय जगन्नाथ!”

कई दिनों की कठिन यात्रा के बाद वे ओडिशा पहुँचे। एक दिन वे चलते-चलते एक छोटे नगर रेमुणा पहुँचे। वहाँ दूर से एक भव्य मंदिर दिखाई दिया। मंदिर के शिखर पर पताका लहरा रही थी और घंटियों की मधुर ध्वनि पूरे वातावरण में घुली हुई थी। माधवदास ने किसी स्थानीय व्यक्ति से पूछा, “भाई, यह किसका मंदिर है?” उस व्यक्ति ने श्रद्धापूर्वक उत्तर दिया, “यह भगवान गोपीनाथ का मंदिर है। यहाँ प्रतिदिन प्रभु को सात कसोरों में खीर का भोग लगाया जाता है। कहा जाता है कि यह खीर स्वयं भगवान को अत्यंत प्रिय है।”

यह सुनते ही माधवदास के हृदय में आनंद उमड़ पड़ा। उन्होंने सोचा, “यदि आज मुझे इस गोपीनाथ के दर्शन हो जाएँ और थोड़ा सा प्रसाद मिल जाए, तो मेरा जीवन सफल हो जाएगा।” वे मंदिर की ओर चल पड़े। मंदिर में प्रवेश करते ही उनका हृदय गद्गद हो उठा। भगवान गोपीनाथ की मूर्ति अपूर्व थी — बड़ी-बड़ी कमल समान आँखें, मोहक मुस्कान और मस्तक पर झिलमिलाता तिलक। वे दर्शन करते हुए वहीं खड़े रह गए, जैसे समय थम गया हो।

थोड़ी देर बाद जब आरती समाप्त हुई और प्रसाद बाँटने की तैयारी हुई, तो वे भी भक्तों की पंक्ति में जाकर बैठ गए। सात कसोरों में से निकाली गई खीर भक्तों को दी जा रही थी। पंक्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ती गई। सभी भक्तों को खीर मिली। अंत में जब माधवदास के पास पुजारी पहुँचा, तो उसने विनम्रता से कहा, “बाबा, क्षमा करें, आज खीर समाप्त हो गई।” माधवदास ने शांत भाव से सिर झुकाया और बोले, “प्रभु की इच्छा में ही सब कुछ है।” वे उठकर बाहर चले गए और मंदिर के बाहर एक पुराने पीपल के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गए। हवा में रात का सन्नाटा घुल चुका था। आसमान में तारों की टिमटिमाहट थी। उन्होंने अपनी आँखें बंद कीं और बोले, “हे मेरे प्रभु, आप तो भूखों को भोजन देने वाले हैं, निर्धनों के पालनहार हैं। आज मैं आपके द्वार तक आया और बिना खीर के लौट रहा हूँ, शायद यह भी आपकी कोई लीला होगी। मुझे शिकायत नहीं, क्योंकि आपका स्मरण ही मेरे लिए अमृत है।”

उस रात मंदिर में सब दीप बुझ चुके थे। पुजारी अपने कमरे में विश्राम कर चुका था। तभी अचानक उसे स्वप्न आया। उसने देखा कि स्वयं भगवान गोपीनाथ उसके सामने खड़े हैं। उनके मुख पर वही मोहक मुस्कान थी। भगवान बोले, “उठो पुजारी! मेरा एक भक्त मंदिर के बाहर बैठा है। वह भूखा है। उसके लिए खीर लेकर जाओ।”

पुजारी घबराकर बोला, “प्रभु! सारी खीर तो आज भक्तों में बाँट दी गई थी, एक भी कसोरा नहीं बचा।” भगवान हँसे और बोले, “सात कसोरों में से एक मैंने अपने लिए रख लिया था। जाकर मंदिर में देखो।”

स्वप्न टूटते ही पुजारी पसीने से भीग गया। उसने तुरंत दीपक जलाया और भागता हुआ गर्भगृह पहुँचा। वहाँ का दृश्य देखकर उसके कदम ठिठक गए — सचमुच वहाँ एक कसोरा रखा था, जिसमें खीर अब भी गर्म थी। हल्की भाप उठ रही थी और उसकी सुगंध चारों ओर फैल रही थी। पुजारी की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने वह कसोरा उठाया और दौड़ता हुआ मंदिर के बाहर आया। पेड़ के नीचे माधवदास ध्यान में मग्न बैठे थे। पुजारी ने नम्रता से उनके पास जाकर कहा, “बाबा, यह खीर भगवान ने स्वयं आपके लिए रखी है।” माधवदास ने आँखें खोलीं और विस्मय से देखा — “खीर? पर खीर तो खत्म हो गई थी, यह कहाँ से आई?” पुजारी की आवाज काँप रही थी, “प्रभु ने स्वयं खीर अपने पास रखी थी, आपके प्रेम के कारण। उन्होंने कहा कि आप मेरे भूखे भक्त हैं, आपके लिए मैं चोर बन गया हूँ।”

यह सुनते ही माधवदास की आँखों से आँसू बह निकले। उन्होंने वह खीर अपने सिर पर रखी और भावविभोर होकर बोले, “हे मेरे गोपीनाथ! तू तो मेरे प्रेम में चोर बन गया! तेरा नाम अब से खीर चौरा ही रहेगा।” और वे आनंद में झूमने लगे। उनके नृत्य में भक्ति की वह शक्ति थी जिसने स्वयं भगवान को चोर बना दिया था।

उस दिन के बाद से रेमुणा का वह मंदिर “खीर चौरा गोपीनाथ मंदिर” कहलाने लगा। आज भी वहाँ प्रतिदिन भगवान को सात कसोरों में खीर का भोग लगता है, और कहा जाता है कि उनमें से एक कसोरा हमेशा प्रेम का प्रतीक माना जाता है — वह जो भगवान ने अपने भक्त के लिए स्वयं सुरक्षित रखा था।

यह कथा केवल एक संत की नहीं, बल्कि उस अनंत सत्य की है कि जब प्रेम शुद्ध होता है, तो भगवान स्वयं भक्त के भाव में बंध जाते हैं। वे नियम, मर्यादा, और देवत्व की सीमा सब भूल जाते हैं। वे दास बनते हैं, सेवक बनते हैं, यहाँ तक कि चोर भी बन जाते हैं — पर अपने सच्चे प्रेमी को निराश नहीं करते। आज भी जब रेमुणा के मंदिर में दीप जलते हैं और हवा में खीर की मधुर सुगंध फैलती है, तो लगता है मानो वही रात लौट आई है — जब भगवान गोपीनाथ ने अपने भूखे भक्त के लिए खीर चुरा ली थी। वह खीर केवल अन्न नहीं थी, वह प्रेम का प्रसाद थी — वह अमृत जो यह सिद्ध करता है कि ईश्वर का हृदय प्रेम के आगे झुक जाता है। और जब प्रेम सच्चा हो, तो भगवान भी मनुष्य बनकर अपने भक्त के लिए चोरी करने में संकोच नहीं करते। यही भक्ति की पराकाष्ठा है, यही प्रेम का सत्य है, यही गोपीनाथ की अमर लीला है।

बेहतर भविष्य की आस में बिहार, दशकों के अधूरे आश्वासनों करना होगा दूर

बिहार में हो रहे विधानसभा चुनाव में सत्ताधारी गठबंधन राज्य को औद्योगिक केंद्र में बदलने का स्वप्न दिखा रहा है, तो विपक्षी महागठबंधन सामाजिक न्याय और आरक्षण के अपने आजमाए हुए मुद्दों को नई धार देता दिख रहा है। किंतु इसके बीच कुछ बुनियादी प्रश्न हैं, जो बिहार के आत्मा को कुरेद रहे हैं। क्या यह चुनाव केवल सत्ता के अंकगणित का एक और अध्याय बनकर रह जाएगा या यह उस गहरी खाई को पाटने का एक ईमानदार अवसर बनेगा, जो वादों और यथार्थ के बीच दशकों से चौड़ी होती जा रही है? यह केवल व्यक्तित्वों या गठबंधनों की प्रतिस्पर्धा नहीं है, बल्कि उस समाज के लिए सामूहिक आत्म-चिंतन का एक दुर्लभ क्षण है, जो अपनी गौरवशाली सभ्यतागत विरासत और अपनी वर्तमान वास्तविकता के बीच की असहनीय दूरी से जूझ रहा है।

आज बिहार की धरती प्रवासन, बेरोजगारी और अधूरी आकांक्षाओं का प्रतीक बन गई है। इसलिए असली सवाल यह नहीं है कि कौन जीतेगा, बल्कि यह है कि क्या बिहार की राजनीति नवीनीकरण का एक शक्तिशाली साधन बन सकती है? बिहार की राजनीति में आज किसी भी दल के लिए सबसे बड़ी चुनौती नए वादे गढ़ना नहीं, बल्कि उस गहरे अविश्वास और संदेह को दूर करना है, जो दशकों के अधूरे आश्वासनों से उपजा है। हर चुनावी चक्र ‘अधूरी उम्मीदों की बढ़ती भावना’ को ही मजबूत करता है।

संकट अब उम्मीद का नहीं, विश्वसनीयता का है, जहां नागरिक अब केवल बयानबाजी नहीं, बल्कि अपनी आंखों के सामने परिवर्तन का ठोस प्रमाण मांग रहे हैं। बिहार अपनी युवा पीढ़ी को लगातार विफल कर रहा है, जिससे एक ऐसा जनसांख्यिकीय संकट पैदा हो रहा है, जिसकी विशेषता चौंकाने वाली बेरोजगारी, मजबूरन प्रवासन और व्यवस्थागत निराशा है। राज्य की बेरोजगारी दर राष्ट्रीय औसत से लगभग दोगुनी है, लेकिन इससे भी भयावह यह है कि यहां के अधिकांश युवाओं ने काम खोजने की उम्मीद ही छोड़ दी है।

बेरोजगारी सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे युवाओं में है। स्नातकों के लिए यह 14.7 प्रतिशत और स्नातकोत्तर के लिए 19 प्रतिशत तक पहुंच गई है। पटना की सड़कों पर गूंजता नारा, “करो तो सरकारी नौकरी, नहीं तो बेचो तरकारी” लाखों युवाओं के टूटे सपनों का प्रतीक बन गया है। इसी निराशा का सीधा परिणाम प्रवासन है।

जब राज्य में अवसर नहीं मिलते, तो लगभग लाखों बिहारी श्रमिक दिल्ली, पंजाब और महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्थाओं को अपने खून-पसीने से सींचते हैं। बार-बार होने वाले परीक्षा पेपर लीक जैसी व्यवस्थागत विफलताएं युवाओं की आकांक्षाओं पर प्रणालीगत हिंसा के समान हैं। जो भूमि कभी नालंदा और विक्रमशिला जैसे ज्ञान के वैश्विक केंद्रों का घर थी, वह आज अपने बच्चों को मूलभूत शिक्षा प्रदान करने में भी विफल हो रही है, जिससे गरीबी और प्रवासन का एक अंतहीन चक्र बना हुआ है।

गणतंत्र के शुरुआती दिनों में जहां देश के विश्वविद्यालय नामांकन में बिहार का लगभग दसवां हिस्सा था, वहीं आज यह तीन प्रतिशत से भी कम रह गया है। स्कूल मौजूद हैं, शिक्षक नियुक्त हैं, पाठ्यक्रम छपे हुए हैं, लेकिन सीखने-सिखाने की जवाबदेही नदारद है। जिनके पास साधन हैं, वे अपने बच्चों को राज्य से बाहर भेजकर इस व्यवस्था से बच निकलते हैं, जबकि गरीब एक ऐसी प्रणाली में फंस गए हैं, जो ऊपर उठने का कोई वास्तविक रास्ता नहीं दिखाती है।

जब तक ज्ञान की नींव ही कमजोर हो, तब तक कौशल विकास और उद्योगीकरण की बातें बेमानी लगती हैं। किसी भी सरकार के लिए सार्वजनिक शिक्षा का पुनर्निर्माण सबसे परिवर्तनकारी कार्य हो सकता है, फिर भी यह राजनीतिक घोषणापत्रों में प्राथमिकता की दृष्टि से एकदम निचले पायदान पर है।

वर्ष 2016 में लागू की गई शराबबंदी आज इस बात का उदाहरण बन गई है कि कैसे नेक इरादों वाली नीतियां जब खराब तरीके से डिजाइन और लागू की जाती हैं, तो प्रशासनिक आपदाओं में बदल सकती हैं। शराब खत्म होने के बजाय इस प्रतिबंध ने एक समानांतर अवैध अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है, जिसने शराब तस्करों, पुलिस और राजनेताओं के एक नए गठजोड़ का जाल बुना है। जहरीली शराब से सैकड़ों मौतें इस काले बाजार का क्रूर परिणाम हैं।

इसने अदालतों को मामलों से और जेलों को छोटे-मोटे अपराधियों से भर दिया है। मार्च 2025 तक 9,36,000 से अधिक मामले दर्ज किए गए और 14.3 लाख लोगों को गिरफ्तार किया गया था। हालांकि द लैंसेट पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन का अनुमान है कि इस प्रतिबंध ने राज्य में घरेलू हिंसा के 21 लाख मामलों को रोका है। सामाजिक दृष्टि से यह आंकड़ा बहुत महत्वपूर्ण है और बताता है कि अभी भी अधिकतर महिलाएं इस नीति का समर्थन क्यों करती हैं। पुराने स्थापित दल इस मुद्दे पर फंसे हुए हैं।

वे न तो इसकी विफलताओं को स्वीकार कर सकते हैं और न ही इसे निरस्त करने का प्रस्ताव देकर एक प्रमुख वोट बैंक को नाराज करने का जोखिम उठा सकते हैं। सवाल केवल अगले पांच साल के शासन का नहीं, बल्कि यह है कि बिहार कैसा शासन स्वीकार करने को तैयार है। यदि मतदाता जनता के प्रति जवाबदेह शासन के निर्माण में भागीदार बनते हैं, तो वे राजनीति को नवीनीकरण का एक साधन बनने के लिए बाध्य कर सकते हैं।

अभियान

रानीजी की बावड़ी : जब पत्थरों में बोल उठी मानवता और भक्ति की कहानी

राजस्थान की मिट्टी में न जाने कितनी सभ्यताएँ दबी हैं, जिनकी सांसें आज भी हवाओं में सुनाई देती हैं। यह भूमि केवल युद्ध, वीरता और गौरव की गाथाओं से नहीं जानी जाती, बल्कि यह करुणा, धर्म और मानवता की भी साक्षी रही है। इसी धरती पर, जहाँ रेत के कणों में इतिहास लिखा गया है, वहीं बूंदी नाम का नगर अपनी बावड़ियों और स्थापत्य-कला के लिए विश्वविख्यात है। बूंदी की इन बावड़ियों में सबसे अद्भुत और दिव्य है — रानीजी की बावड़ी, जो केवल एक जलस्रोत नहीं, बल्कि मानवता, भक्ति और शिल्पकला का जीवंत मंदिर है।

समय था सत्रहवीं शताब्दी का, जब बूंदी पर राजपूत राजा राव राजा अनिरुद्ध का शासन था। यह वह काल था जब शासक केवल युद्ध में नहीं, बल्कि जनता की सेवा में भी अपने धर्म का निर्वाह करते थे। अनिरुद्ध की पत्नी, रानी नाथावती सोलंकी, अत्यंत धर्मनिष्ठ और जनकल्याण में विश्वास रखने वाली रानी थीं। एक बार राज्य में अकाल पड़ा, कुएँ सूख गए, नदियाँ सिकुड़ गईं और जनता प्यास से व्याकुल हो उठी। रानी ने देखा कि महलों में तो पानी का प्रबंध है, परंतु आम लोग बूंद-बूंद के लिए तरस रहे हैं। उस क्षण उन्होंने निर्णय लिया कि एक ऐसी बावड़ी बनवानी होगी, जो आने वाले युगों तक जनसेवा का प्रतीक बनी रहे।

सन 1699 में इस दिव्य निर्माण का शुभारंभ हुआ। यह कार्य केवल पत्थरों को जोड़ने का नहीं था, यह मानवता के मंदिर को गढ़ने का प्रयास था। रानी ने राज्य के श्रेष्ठ शिल्पियों, मूर्तिकारों और वास्तुकारों को बुलवाया। महीनों तक योजना बनी। शिल्पियों ने जब भूमि पर पहली रेखा खींची, तो मानो आकाश भी झुककर आशीर्वाद देने लगा। निर्माण कई वर्षों तक चला और अंततः महाराव बुद्ध सिंह के शासनकाल में यह बावड़ी पूर्ण हुई।

रानीजी की बावड़ी केवल एक जल-संरचना नहीं थी — यह प्रेम, दया और सनातन धर्म की मूर्त प्रतीक थी। लगभग 151 फीट गहरी, तीन मंजिला यह बावड़ी सवा तीन सौ वर्षों से अधिक समय से खड़ी है। इसकी सीढ़ियों की गिनती करते-करते लगता है मानो हम इतिहास की परतों में उतरते जा रहे हों। सौ से अधिक सीढ़ियाँ नीचे उतरते हुए जो ठंडक महसूस होती है, वह केवल पत्थर की नहीं, बल्कि उस रानी की करुणा की छाया है जिसने इसे बनवाया था।

बावड़ी में प्रवेश करते ही सबसे पहले एक भव्य तोरण द्वार दिखाई देता है। उसके शिखर पर नक्काशीदार हाथी ऐसे खड़े हैं

मानो वे आने वाले हर अतिथि का स्वागत कर रहे हों। चार विशाल स्तंभों से घिरा यह प्रवेश मार्ग तीनों तलों तक ले जाता है। पत्थर की दीवारों पर ऐसी सूक्ष्म नक्काशी है कि हर आकृति, हर रेखा एक कथा कहती प्रतीत होती है।

यहाँ के राजा शिव-परिवार के परम भक्त थे, और इसलिए इस बावड़ी में शिव-तत्त्व की झलक सर्वत्र मिलती है। हाथियों की उकेरी हुई कतारें, त्रिशूल और डमरू की आकृतियाँ, और विभिन्न देवताओं की मूर्तियाँ इस बात की साक्षी हैं कि यह केवल जल का भंडार नहीं, बल्कि एक जीवित मंदिर था। इसके तलों पर भगवान विष्णु के दशावतार, माँ सरस्वती, गणेश जी, और गजेन्द्र मोक्ष की कथा अत्यंत सजीव रूप में उकेरी गई हैं। हर मूर्ति के चेहरे पर वही शांति और सौंदर्य झलकता है जो राजस्थानी शिल्पकला को अमर बनाता है। यह बावड़ी विदेशी स्थापत्य के प्रभाव से पूर्णतः अछूती रही। यहाँ कोई यूरोपीय छाया नहीं, कोई बाहरी डिज़ाइन नहीं — केवल शुद्ध भारतीय कला, जो भावना से उपजी थी, गणना से नहीं। हर पत्थर, हर खंभा इस बात का साक्षी है कि भारतीय शिल्पकार केवल वास्तु नहीं बनाते, वे आत्मा को आकार देते हैं।

कहा जाता है कि इस बावड़ी में आज भी रानी नाथावती की आत्मा वास करती है। कई स्थानीय लोग बताते हैं कि रात्रि के समय कभी-कभी किसी स्त्री के पैरों की पायल की हल्की झंकार सुनाई देती है, मानो वह अपनी प्रजा के हाल जानने फिर उतर आई हो। किंवदंती यह भी है कि रानी ने अपने जीवन का अंतिम समय इसी बावड़ी के समीप बिताया था, और इसीलिए यहाँ “सती माता का चबूतरा” बनाया गया, जहाँ आज भी लोग श्रद्धा से दीप जलाते हैं।

बूंदी की यह बावड़ी केवल स्थापत्य का अजूबा नहीं, बल्कि एक दार्शनिक संदेश भी देती है — “जो देता है वही अमर होता है।” रानी ने जो निर्माण किया, वह केवल जल के लिए नहीं था, बल्कि यह उनके करुणा और धर्म की मूर्ति थी।

आज जब आधुनिक दुनिया में हम समाज से अधिक लेने और कम लौटाने की प्रवृत्ति में उलझे हैं, तो रानीजी की बावड़ी हमें एक संदेश देती है — मानवता का सच्चा अर्थ देने में है, और सेवा की सबसे सुंदर मूर्ति वही है जो पत्थरों से नहीं, भावनाओं से गढ़ी गई हो।

बूंदी आज भी अपनी नीली छतों, संकरी गलियों और हवेलियों के बीच इस बावड़ी को सहेजे हुए है। सुबह के समय जब सूर्य की पहली किरणें बावड़ी के जल में उतरती हैं, तो लगता है मानो रानी नाथावती स्वयं उस जल में खिल उठी हों। उनकी आत्मा, वह करुणा, वह भक्ति — सब उस जल में आज भी झलकते हैं।

यदि कोई यात्री कोटा से बूंदी आता है, तो यह यात्रा केवल एक पर्यटन नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा बन जाती है। क्योंकि इस बावड़ी में उतरते-उतरते व्यक्ति समय में नहीं, बल्कि अपने भीतर उतरता है — जहाँ उसे यह एहसास होता है कि मानवता और कला जब एक साथ जुड़ते हैं, तो इतिहास केवल लिखा नहीं जाता, वह जीवित हो उठता है।

रानीजी की बावड़ी यही कहती है —
“जहाँ जल है, वहाँ जीवन है; पर जहाँ करुणा है, वहीं ईश्वर है।”

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

गुजरात सरकार के उद्यमिता प्रशिक्षण से राज्य के जनजातीय बन रहे आत्मनिर्भर, पिछले 4 वर्षों में 120+ जनजातीय बने सफल उद्यमी

- पिछले 4 वर्षों में 2 करोड़ खर्च कर 1,000+ युवाओं को दिया उद्यमिता प्रशिक्षण
- उद्यमिता प्रशिक्षण के लिए राज्यभर में संचालित है 42 स्किल अप-ग्रेडेशन सेंटर्स (SUCs) और 9 रीजनल सेन्टर्स
- वर्ष 2021–22 से 2024–25 के बीच 1300+ जनजातीय युवाओं को मिला कौशल प्रशिक्षण, 223 लाभार्थियों को मिले रोजगार के अवसर

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "जनजातीय समाज को आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर करने" के विचार मंत्र को आधार बनाकर गुजरात सरकार राज्य के आदिवासी समाज के आर्थिक सशक्तिकरण, और आत्मनिर्भरता के लिए कई गहन प्रयास कर रही है। गुजरात के उद्योग आयुक्त कार्यालय के अंतर्गत कार्यरत उद्यमिता विकास केंद्र (CED गुजरात) द्वारा जनजातीय युवाओं के कौशल, रोजगार और उद्यमिता विकास को गति देने के लिए कई वर्षों से उद्यमिता प्रशिक्षण और कौशल विकास की सुविधा दी जा रही है।

4 वर्षों में 1,000+ युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण, 2 करोड़ खर्च, 120 बने सफल उद्यमी

पिछले चार वर्षों (2021-22 से 2024-25) में गुजरात सरकार, उद्योग आयुक्तालय के अधीन कार्यरत सेंटर फॉर ऑन्त्रप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट (CED) ने 14 से अधिक जनजातीय जिलों में ऑन्त्रप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम (EDP) और जागरूकता कार्यशालाओं के माध्यम से हजारों युवाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सशक्त रूप से प्रेरित किया है। उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार की इस विशेष पहल के द्वारा हर साल आदिजाति क्षेत्र के लगभग 200 से अधिक युवाओं को विभिन्न उद्यमिता से संबंधित प्रोफेशनल ट्रेनिंग की सुविधा दी जाती है जिससे राज्य के आदिवासी जिलों के लगभग 30 से अधिक प्रशिक्षु स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। बीते 4 वर्षों में राज्य सरकार ने 2 करोड़ खर्च कर 1000+ आदिजाति युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण की सेवाएँ दी है। इनमें से 120+ युवा अब अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालित करते हुए आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।इसी तरह कौशल विकास के प्रयास के तहत 2021-22 से 2024-25 के दौरान 1300+ जनजातीय युवाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया गया। उल्लेखनीय है कि पिछले तीन वर्षों में 223 आदिजाति युवाओं को प्रशिक्षण के पश्चात प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं।

गुजरात सरकार के प्रयासों से जनजातीय युवा बन रहे आत्मनिर्भरता की मिसाल

गुजरात में कौशल विकास और उद्यमिता प्रशिक्षण के प्रभाव अब ज़मीन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। वलसाड जिले के गुंडलव GIDC में श्री हितेश पटेल ने भी राज्य सरकार के CED से बिज़नेस डेवलपमेंट प्रशिक्षण के बाद स्टैंडर्ड इक्विपमेंट संस्था की स्थापना की। रासायनिक उद्योग में उपयोग होने वाले प्रोसेस पंपों के निर्माण में उनकी कंपनी अब अग्रणी बन चुकी है। आदित्य बिड़ला ग्रुप और MERCK जैसे दिग्गज ग्राहक, 15 सदस्यों की टीम और 3 करोड़ का वार्षिक कारोबार स्पष्ट करता है कि कौशल-आधारित उद्यमिता क्षेत्रीय औद्योगिक विकास के लिए कितनी निर्णायक साबित हो सकती है। डांग की जनजातीय बस्ती की श्रीमती दक्षाबेन बिरारी ने CED के प्रशिक्षण और सखी मंडल के सहयोग से अंबिका हलदर फ़ार्म स्थापित कर पारंपरिक हल्दी खेती को आधुनिक एग्रो-बिज़नेस में बदला।

क्या है जनजातीयों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए गुजरात का उद्यमिता प्रशिक्षण मॉडल?

गुजरात सरकार के उद्यमिता प्रशिक्षण मॉडल में 42 स्किल अप-ग्रेडेशन सेंटर्स, एंकर इन्स्टीट्यूट्स, उद्योग आधारित ब्रिज कोर्सेस और स्पेशलाइज़्ड स्किल डेवलपमेंट सेंट्र को मिलाकर एकीकृत और मज़बूत व्यवस्था विकसित की गई है। आधुनिक उपकरणों, स्मार्ट क्लासरूम और स्थानीय उद्योगों के साथ साझेदारी के माध्यम से इन केंद्रों को इस प्रकार सक्षम बनाया गया है कि प्रशिक्षण सीधे उद्यमिता और रोजगार में परिवर्तित हो सके। ये प्रशिक्षण कोर्स कई क्षेत्रों रासायनिक प्रसंस्करण, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स, परिधान और सिलाई, सौंदर्य एवं वेलनेस, लॉजिस्टिक्स, आईटी और डेटा एंट्री, तथा नवीकरणीय ऊर्जा सहित को कवर करते हैं। राज्य सरकार का कहना है कि इन कोर्सों का पाठ्यक्रम स्थानीय आर्थिक संभावनाओं और उद्योग की वास्तविक जरूरतों के अनुरूप तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात की लोक कला और लोक संस्कृति के प्रहरी पद्मश्री दिवंगत जोरावरसिंह जादव को श्रद्धासुमन अर्पित किए

गुजरात यूनिवर्सिटी में दिवंगत जोरावरसिंह जादव की प्रार्थना सभा आयोजित हुई

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात की जीवंत लोक कलाओं, लोक जीवन और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को 110 से अधिक पुस्तकों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल विरासत के रूप में छोड़ जाने वाले सुप्रसिद्ध लेखक, शोधकर्ता और पद्मश्री पुरस्कार विजेता दिवंगत जोरावरसिंह जादव की प्रार्थना सभा सोमवार को अहमदाबाद स्थित गुजरात यूनिवर्सिटी में आयोजित हुई। राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस प्रार्थना सभा में उपस्थित रहकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किए। दिवंगत जोरावरसिंह जादव लेखक और शोधकर्ता के अलावा गुजरात की धरती को जीवंत रखने वाली लोक कलाओं और लोक कलाकारों के जीवंत संरक्षक थे। आकरुं गांव से शुरू हुई लोक कला संवर्धन की उनकी अनूठी यात्रा गुजरात के सांस्कृतिक इतिहास का एक विशिष्ट अध्याय है। दिवंगत जोरावरसिंह जादव को वर्ष 2019 में भारत सरकार की ओर से पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने संगीत नाटक अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएं दी थीं। इसके अलावा, उन्होंने गुजराती लोक संग्रहालय 'विरासत' का सृजन किया, जिसका उद्घाटन भी मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने ही किया था। प्रार्थना सभा में बड़ी संख्या में लोक कलाकार, साहित्यकार, नागरिक और उनके प्रशंसकों ने उपस्थित रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

न्यू भुज रेलवे स्टेशन का उन्नयन कार्य तेजी से प्रगति पर,75 प्रतिशत कार्यपूर्ण, यात्रियों को मिलेंगी आधुनिक अवसंरचना और विश्वस्तरीय सुविधाएँ

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर अमृत भारत स्टेशन योजना (ABSS) के अंतर्गत न्यू भुज रेलवे स्टेशन का उन्नयन कार्य तेजी से प्रगति पर है। इस परियोजना की स्वीकृत लागत लगभग 200 करोड़ है, जिसमें से लगभग 75% कार्य अब तक पूर्ण हो चुका है। साथ ही भुज स्टेशन यार्ड में दो पिट लाइन भी बनाई जा रही है, नई पिट लाइनें बनने से कोचिंग ऑपरेशनों की क्षमता और दक्षता में वृद्धि होगी, जिससे ब्रॉड गेज (BG) रेक मेंटेनेंस और ऑपरेशन संभव हो सकेगा। भुज-नलिया मीटर गेज रेलखंड (101.40 किमी) को ब्रॉड गेज लाइन में परिवर्तित किया जा चुका है। जिसे 28 अक्टूबर 2024 को माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश को समर्पित किया। साथ ही नलिया से जखाऊ पोर्ट तक 28.88 किमी नई ब्रॉड गेज लाइन का कार्य प्रगति पर है। इससे कच्छ जिले के दूरस्थ क्षेत्रों को देश के रेल नेटवर्क से निर्बाध ब्रॉड गेज संपर्क प्रदान होगा। इस रेल लाइन से पोर्ट कनेक्टिविटी में वृद्धि होगी तथा कच्छ जिले में बंदरगाहों के माध्यम से निर्यात-आयात को प्रोत्साहन मिलेगा। इस क्षेत्र के सीमेंट उद्योगों को भी इससे विशेष लाभ होगा और नमक, खनिज एवं अन्य कच्चे माल के कुशल परिवहन में सुगमता आएगी। भुज-नलिया रेल लाइन का आगे वायोर तक (26.55 किमी) विस्तार का कार्य भी प्रगति पर है इसके पूर्ण होने पर देश की सेना को सीमा क्षेत्र तक पहुँचने और सामान परिवहन में भी सुविधा मिलेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 27 अगस्त 2025 को देशलपर - हाजीपीर - लूना और वायोर - लखपत नई लाइन परियोजनाओं को मंजूरी दी है। प्रस्तावित नई रेल लाइन कच्छ क्षेत्र के सुदूर इलाकों को कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। यह गुजरात के मौजूदा रेलवे नेटवर्क में 145 रूट किमी और जोड़ेगी, जिसकी अनुमानित लागत 2526 करोड़ रुपये है।

गुजरात राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के अलावा, यह नई रेल लाइन नमक, सीमेंट, कोयला, क्लिंकर और बेंटोनाइट के परिवहन में भी मदद करेगी। इस परियोजना का सामरिक महत्व यह है कि यह कच्छ के रण को कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। हड़प्पा स्थल धोलावीरा, कोटेश्वर मंदिर, नारायण सरोवर और लखपत किला भी रेल नेटवर्क के अंतर्गत आएंगे क्योंकि 13 नए रेलवे स्टेशन जोड़े जाएँगे जिससे 866 गाँवों और लगभग 16 लाख आबादी को लाभ होगा। इन विकासात्मक पहलों से क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति को गति मिलेगी।

गुजरात का गांधीधाम क्षेत्र पश्चिम रेलवे का अधिकतम माल लदान वाला क्षेत्र है यहां से अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 तक औद्योगिक नमक का 1.727 मिलियन मीट्रिक टनT, खाद्य नमक का 1.119 मिलियन मीट्रिक टन और कंटेनर का 10.586 मिलियन मीट्रिक टन का लदान किया गया। जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

न्यू भुज स्टेशन का यह रूपांतरण न केवल रेल यात्रियों के लिए बल्कि स्थानीय नागरिकों और पर्यटकों के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा। भुज स्टेशन को आगामी 40 से 50 वर्षों तक की कच्छ क्षेत्र की यात्रा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पुनर्विकसित किया जा रहा है।

परियोजना की प्रमुख विशेषताएँ एवं लाभः

- मुख्य स्टेशन भवनः लगभग 1.37 लाख वर्गफुट क्षेत्र में तथा द्वितीय प्रवेश भवन 11,600 वर्गफुट क्षेत्र में बनाया जा रहा है, जिससे यात्रियों की आवाजाही और सुगमता में वृद्धि होगी।
- आधुनिक वेटिंग एरिया कांकर्सः 8,000 वर्गफुट में 450 से अधिक यात्रियों के बैठने की व्यवस्था होगी, जिससे प्रतीक्षा के दौरान आरामदायक रहेगा।
- विशाल कांकर्सः (35,000 वर्गफुट) यात्रियों के आवागमन को सुविधाजनक बनाएगा और भीड़-प्रबंधन में सहायता करेगा।
- सुगम संपर्क व्यवस्थाः स्टेशन पर कुल 3 फुट ओवरब्रिज (FOB) बनाए जा रहे हैं, जिनमें दो 6 मीटर चौड़े एवं एक 8 मीटर चौड़ा है। इससे प्लेटफॉर्मों के बीच यात्रियों की आवाजाही और अधिक सुरक्षित एवं आसान होगी।
- प्लेटफ़ॉर्म उन्नयनः लगभग 1.32 लाख वर्गफुट क्षेत्र जिसमें 1.20 लाख वर्गफुट की छतयुक्त संरचना यात्रियों को हर मौसम में सुविधा प्रदान करेगी।
- हरित एवं स्मार्ट अवसंरचनाः 500 KWP सौर ऊर्जा संयंत्र, वर्षा जल संचयन प्रणाली, 560 KLD सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट तथा 32,000 वर्गफुट से अधिक हरित क्षेत्र का विकास पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाएगा।
- उन्नत यात्री सुविधाएँ: 13 लिफ्ट, 10 एस्केलेटर, आधुनिक फायर डिटेक्शन सिस्टम, 250 टन क्षमता का HVAC सिस्टम (Heating, Ventilation and Air Conditioning), CCTV निगरानी, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, एक्सेस कंट्रोल, SCADA (Automatic Chemical Agent Detection and Alarm) और Wi-Fi सुविधा से यात्रियों को सुरक्षा, सुविधा और कनेक्टिविटी का समन्वय मिलेगा।
- पार्किंग सुविधाः स्टेशन के दोनों ओर 50 से अधिक कारों, 400 से अधिक दोपहिया वाहनों, 30 ऑटो रिक्शा और 4 इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन की व्यवस्था की जा रही है, जिससे यात्रियों और स्थानीय नागरिकों को बेहतर पार्किंग अनुभव मिलेगा।
- पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिबद्धताः हरित भवन प्रमाणन प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, साथ ही परिसर में वृक्षारोपण एवं पौधारोपण से स्वच्छ और हरित वातावरण सुनिश्चित किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से भेंट की

वाइब्रेंट गुजरात समिट की सफलता तथा सीएम डैशबोर्ड से प्रभावित हुए साय

(जीएनएस)। गांधीनगर : छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने सोमवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से भेंट की।

श्री साय एकता नगर में चल रहे भारत पर्व में सोमवार रात होने वाली छत्तीसगढ़ राज्य की विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए गुजरात यात्रा पर आए हैं।

वे आगामी समय में छत्तीसगढ़ में आयोजित होने जा रहे छत्तीसगढ़ इन्वेस्टर कनेक्ट में गुजरात के निवेशकों को आकर्षित करने के लिए मंगलवार को अहमदाबाद में उनके साथ बैठकें करने वाले हैं। इन कार्यक्रमों से पहले श्री साय ने सोमवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से मुलाकात की और गुजरात द्वारा वाइब्रेंट समिट की उत्तरोत्तर सफलता के चलते मोस्ट प्रिफर्ड डेस्टिनेशन फॉर इन्वेस्टमेंट का स्थान प्राप्त किए जाने के बारे में जानने में गहरी रुचि दर्शाई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में इस वर्ष रीजनल वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस के प्रयोग द्वारा गुजरात के जिलों में औद्योगिक निवेशकों को प्रोत्साहित कर वोकल फॉर लोकल तथा लोकल टु ग्लोबल के उद्देश्य के साथ वर्ल्ड मार्केट देने के दृष्टिकोण से अवगत कराया।

श्री साय ने गुजरात की इंडस्ट्रियल पॉलिसी की विस्तृत जानकारी के लिए प्रधान उद्योग सचिव सहित वरिष्ठ सचिवों के साथ भी बैठक की।

इतना ही नहीं; उन्होंने गुजरात में पब्लिक डिलीवरी सर्विसेज सिस्टम तथा जन हितकारी योजनाओं की ट्रांसपरेंट एवं रीयल टाइम मॉनिटरिंग के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में विकसित किए गए सीएम डैशबोर्ड की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सीएम डैशबोर्ड की भी मुलाकात ली। वे रीयल टाइम मॉनिटरिंग तथा जन संवाद केन्द्र के फीडबैक मैकेनिज्म के कामकाज की सघन जानकारी प्राप्त कर प्रभावित हुए। उन्होंने गुजरात की ऐसी पहलों को छत्तीसगढ़ में शुरू करने में भी रुचि दर्शाई। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ मुलाकात के अवसर पर मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, इंडस्ट्रियल एक्सटेंशन ब्यूरो (इंडेक्स्ट-बी) के प्रबंध निदेशक श्री केयुर संपत तथा सीएम डैशबोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी सहभागी हुए।

गांधीनगर-जयपुर स्टेशन का पुनर्विकास कार्य 35 दिनों के ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के गांधीनगर-जयपुर स्टेशन के पुनर्विकास और बड़े स्तर पर उन्नयन कार्य के मद्देनजर 9 नवंबर से 13 दिसंबर, 2025 तक 35 दिनों का ब्लॉक लिया गया है, जिसके कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट/आंशिक रूप से निरस्त होने वाली ट्रेनें:

1. 11 दिसंबर, 2025 तक बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12979 बांद्रा टर्मिनस-जयपुर एक्सप्रेस सांगानेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन सांगानेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
2. 10 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22933 बांद्रा टर्मिनस-जयपुर एक्सप्रेस सांगानेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन सांगानेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 11 नवंबर, 2025 से 9 दिसंबर, 2025 तक जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22934 जयपुर-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस सांगानेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और सांगानेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
3. 21 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12955 मुंबई सेंट्रल-जयपुर एक्सप्रेस दुर्गापुरा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन दुर्गापुरा और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 22 नवंबर, 2025 से 9 दिसंबर, 2025 तक जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12956 जयपुर-मुंबई सेंट्रल एक्सप्रेस दुर्गापुरा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और दुर्गापुरा के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
4. 22 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09001 मुंबई सेंट्रल-खातीपुरा स्पेशल अजमेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अजमेर और खातीपुरा के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 23 नवंबर, 2025 से 9 दिसंबर, 2025 तक खातीपुरा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09002 खातीपुरा-मुंबई सेंट्रल स्पेशल अजमेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन खातीपुरा और अजमेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
5. 8 दिसंबर, 2025 को ओखा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20951 ओखा-जयपुर एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अजमेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 9 दिसंबर, 2025 को जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20952 जयपुर-ओखा एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और अजमेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनें:

1. 13 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12215 दिल्ली सराय रोहिल्ला-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
2. 13 नवंबर, 2025 से 12 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
3. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19416 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
4. 09 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
5. 24 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20938 दिल्ली सराय रोहिल्ला-पोरबंदर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
6. 26 नवंबर, 2025 और 3 दिसंबर, 2025 तक सुल्तानपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20940 सुल्तानपुर-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
7. 29 नवंबर, 2025 और 06 दिसंबर, 2025 को वाराणसी से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20964 वाराणसी-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
8. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को लखनऊ से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19402 लखनऊ-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-साबरमती स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।
9. 25 नवंबर, 2025 को अयोध्या कैंट से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19202 अयोध्या कैंट-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-अहमदाबाद-विरमगाम स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।

रिशेड्युल होने वाली ट्रेनें:

1. 30 नवंबर, 2025 को मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12239 मुंबई सेंट्रल-हिसार एक्सप्रेस मुंबई सेंट्रल स्टेशन से 01:00 घंटा रिशेड्युल की जाएगी।
2. 23 नवंबर, 2025 से 07 दिसंबर, 2025 तक मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12239 मुंबई सेंट्रल-हिसार एक्सप्रेस मुंबई सेंट्रल स्टेशन से 01:30 घंटे रिशेड्युल की जाएगी।
3. 23 नवंबर, 2025 को इंदौर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12465 इंदौर-भगत की कोठी एक्सप्रेस इंदौर स्टेशन से 03:00 घंटे रिशेड्युल की जाएगी।

सोना वायदा में 2141 रुपये और चांदी वायदा में 4607 रुपये का ऊछालः क्रूड ऑयल वायदा 26 रुपये बढ़ा

कमोडिटी वायदाओं में 32801.24 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 128210.53 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 27667.75 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 29021 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 161015.78 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 32801.24 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 128210.53 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का नवंबर वायदा 29021 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1980.02 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 27667.75 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना दिसंबर वायदा 121768 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123343 रुपये और नीचे में 121768 रुपये पर पहुंचकर, 121067 रुपये के पिछले बंद के सामने 2141 रुपये या 1.77 फीसदी की तेजी के संग 123208 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी नवंबर वायदा 1306 रुपये या 1.33 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 99199 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल नवंबर वायदा 175 रुपये या 1.43 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 12420 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी दिसंबर वायदा 121799 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123255 रुपये और नीचे में 121799 रुपये पर पहुंचकर, 2051 रुपये या 1.69 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 123107 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन नवंबर वायदा प्रति 10 ग्राम 122000 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123414 रुपये और नीचे में 122000 रुपये पर पहुंचकर, 121266 रुपये के पिछले बंद के सामने 1991 रुपये या 1.64 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 123257 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 149540 रुपये के भाव पर खूलकर, 152680 रुपये के दिन के उच्च और 149540 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 147728 रुपये के पिछले बंद के सामने 4607 रुपये या 3.12 फीसदी की तेजी के संग 152335 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी नवंबर वायदा 3836 रुपये या 2.57 फीसदी की बढ़त के साथ 153051 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो नवंबर वायदा 3824 रुपये या 2.56 फीसदी की बढ़त के साथ 153021 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

मेटल वर्ग में 1601.40 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा नवंबर वायदा 8.8 रुपये या 0.88 फीसदी की तेजी के संग 1009.1 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता नवंबर वायदा 3.15 रुपये या 1.04 फीसदी की मजबूती के साथ 305.2 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम नवंबर वायदा 1.65 रुपये या 0.61 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 274.15 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा नवंबर वायदा 75 पैसे या 0.41 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 184.25 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 3527.04 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 5265 रुपये के भाव पर खूलकर, 5370 रुपये के दिन के उच्च और 5265 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 26 रुपये या 0.49 फीसदी की तेजी के संग 5321 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी नवंबर वायदा 25 रुपये या 0.47 फीसदी की तेजी के संग 5324 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 390.1 रुपये के भाव पर खूलकर, 399.9 रुपये के दिन के उच्च और 390 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 385.8 रुपये के पिछले बंद के सामने 11.9 रुपये या 3.08 फीसदी की तेजी के संग 397.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी नवंबर वायदा 11.7 रुपये या 3.03 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 397.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल नवंबर वायदा 923.5 रुपये पर खूलकर, 2.2 रुपये या 0.24 फीसदी घटकर 922 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 15835.48 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 11832.27 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1230.34 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 105.39 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 13.66 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 251.29 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 783.57 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2729.83 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 3.91 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.06 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 16424 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 56763 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 20953 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 289601 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 28968 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 25956 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 47557 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 142386 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17215 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 33756 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 28661 पॉइंट पर खूलकर, 29047 के उच्च और 28661 के नीचले स्तर को छूकर, 530 पॉइंट बढ़कर 29021 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल नवंबर 5400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 4.9 रुपये की बढ़त के साथ 69.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस नवंबर 400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.6 रुपये की बढ़त के साथ 17.5 रुपये हुआ।

मेगा रयान मिनिथॉन इवेंट में दस हज़ार से अधिक विद्यार्थी हुए शामिल

(जीएनएस)। मुंबई। देश के स्कूली विद्यार्थियों के लिए आयोजित होने वाले सबसे बड़े मिनिथॉन में से एक प्रमुख और लोकप्रिय *"मेगा रयान मिनिथॉन-2025"* का सफल आयोजन रविवार , 9 नवम्बर, 2025 को नवी मुंबई में किया गया, जिसमें मुंबई और नवी मुंबई के 24 स्कूलों के 10,605 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए आयोजन संस्थान की प्रमुख प्रतिनिधि और मुंबई की वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती प्रमिला शर्मा ने बताया कि *"मेगा रयान मिनिथॉन 2025"* का आयोजन रयान ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के तत्वावधान में स्कूली छात्रों के लिए 218 वीं दौड़ के रूप में किया गया, जिसका मार्गदर्शन सेंट जेवियर्स के चेयरमैन और रयान इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के मैनेजमेंट ने किया। इस दौड़ को रयान इंटरनेशनल स्कूल, नेरुल से समूह के निदेशक डॉ. स्नेहल पिंटो, स्थानीय पार्षद रवींद्र इथापे, श्रीमती सुरेखा इथापे, शुभम वनमाली, रणवीर सिंह, सुजीत अशोक गडकरी, जाह्नवी शेट्टी, प्रियंका सुजीश, किरण अंचन और विशाल यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उनके साथ आर्यन कमलेश शिर्के, अखलाक खान, कोमल कांबले, पूजा धमाल, हर्ष अग्रवाल, नमोह उनियाल, संजोग गडकरी, चनप्रीत सिंह भुई, शुभम गौर, प्रतीक ठाकुर, सुश्री सुगंध हैमिल्टन,

जोस जैकब, अविनाश अशोक तांबे, सुप्रिया ठाकुर, डॉ. सौरभ सावंत, विराज निमुनकर, मुनेश पुजारी और पल्लवी कोठावड़े भी शामिल रहे। रयान ग्रुप ऑफ स्कूल्स की सुस्थापित परम्परा का पालन करते हुए, विभिन्न क्षेत्रों से आये अतिथियों ने मेगा रयान मिनिथॉन 2025 के शुभारम्भ के बाद पौधारोपण भी किया। अंडर-12 से अंडर-18 तक के खेलकूद के शौकीन विद्यार्थी पीटी वर्दी पहने हुए मैराथन मार्ग पर दौड़ में शामिल हुए, जिनके साथ सभी भाग लेने वाले स्कूलों के शिक्षकों की एक सतत मानव श्रृंखला भी बनी रही। रयान इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस देश में एक खेल संस्कृति विकसित करने के लिए 1998 से बेंगलुरु, दिल्ली, चंडीगढ़, नागपुर, सूरत, जालना, जयपुर और नवी मुंबई में इस तरह की दौड़ का आयोजन करता आ रहा है, जो युवा छात्रों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों के लिए तैयार करने के लिए अनुकूल पहल है। इनमें हर साल औसतन 70 हज़ार छात्र और 350 से अधिक संस्थान भाग लेते हैं। समूह के अध्यक्ष डॉ. ए. एफ. पिंटो ने बताया कि यह मिनिथॉन पूरे भारत में सभी एथलीटों के लिए एक सकारात्मक प्रेरणा है और इस तरह के मिनिथॉन युवाओं के मन में खेलों के प्रति अभिरुचि को बढ़ावा देते हैं। मिनिथॉन में विभिन्न आयु समूहों के विजेताओं को कई प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति में एक शानदार समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का दूसरा सत्र आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों के लिए विभिन्न भाग लेने वाले स्कूलों द्वारा आयोजित एक मनोरंजक कार्यक्रम था। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभु की प्रार्थना, बाइबिल पाठ और प्रार्थना गीत से हुई। जेवियर्स हाई स्कूल एसएससी, गोरेगांव ने 62 अंक हासिल करके नवी मुंबई संभाग के 26वें रयान मिनिथॉन 2025 की चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती। 32 अंकों के साथ सेंट लॉरेंस हाई स्कूल एसएससी, बोरीवली दूसरे स्थान पर और 18 अंकों के साथ सेंट जेवियर्स हाई स्कूल एसएससी, नायगांव तीसरे स्थान पर रहा। प्रत्येक श्रेणी में छह पुरस्कार छात्रों को दिए गए। प्रत्येक दौड़ के कुल अंकों के आधार पर चैंपियनशिप ट्रॉफी का फैसला किया गया।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में 'भारत पर्व' का प्रकाशमय उत्सव एकता नगर जगमगा उठा प्रकाश के रंग से

- भारतीय शैली की कलरफुल लाइटिंग से झिलमिलती स्टैच्यू ऑफ यूनिटी
- प्रकाश पर्व पैवेलियन में लाइटिंग के साथ ढेरों सेल्फी ले रहे पर्यटक
- एलईडी डाइनामिक लाइटिंग से प्रकृति एवं टेक्नोलॉजी के बीच परफेक्ट सिम्फनी रचती है
- लाइटिंग की जगमगाहट से प्रकाशित हुआ राष्ट्रीय एकता एवं प्रकृति के प्रति प्रेम
- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के आकाशीय दृश्यों का अद्भुत नजारा पर्यटकों का आकर्षण
- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्थित जंगल सफारी, कैक्टस गार्डन, बटरफ्लाई गार्डन, सर्किट हाउस, एकता मॉल, एडमिन बिल्डिंग रंगबिरंगी लाइटिंग से जगमगाए

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारतीय संस्कृति में प्रकाश को अंधकार दूर करने के साथ आध्यात्मिक ऊर्जा एवं उत्साह के प्रतीक के रूप में भी माना जाता है। तीज-त्योहार तथा धार्मिक उत्सव में प्रकाश का स्थान महत्वपूर्ण एवं अडिग रहा है। आज के युग में लाइटिंग एक आर्ट बन गई है और भारतीय लाइटिंग शैली की झलक पेरिस के फेस्टिव ऑफ लाइट्स तथा दुबई के लाइट डोम शो में देखने को मिलती है। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में भारत पर्व का ऐतिहासिक उत्सव मनाया जा रहा है, तब एकता नगर कलरफुर लाइटिंग्स के प्रकाश से जगमगा उठा है। प्रकाश पर्व के अवसर पर एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर प्रकाश से जगमगा उठा है। मानो एकता नगर दुल्हन की तरह सज गया है। समग्र क्षेत्र को विभिन्न रंगबिरंगी लाइटिंग से भारत की विभिन्न संस्कृतियों तथा परंपराओं की झाँकियों से सजाया गया है, जहाँ भारत की विविधता में एकता के दर्शन होते हैं।

182 मीटर की दुनिया की सबसे ऊँची सरदार वल्लभभाई पटेल की भव्य प्रतिमा से लेकर सरदार सरोवर बांध तक हर स्थान पर तिरंगे रंग में लेसर लाइट से जगमगाहट छा गई है। प्रकाश के विभिन्न रंग भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता का प्रतीक बनकर खड़े हैं। स्थानीय कलाकारों व शिल्पकारों ने भी अपनी हस्तकला कृतियों को लाइटिंग के प्रकाश द्वारा प्रस्तुत किया है। इस लाइटिंग में आधुनिक टेकनोलॉजी के साथ परंपरागत डिजाइन का समन्वय देखने को मिला है। लाइटिंग तथा फोटोग्राफी का संबंध इतना अविभाज्य है कि जहाँ प्रकाश हो, वहाँ कैमरा स्वयं आकर्षित होता है। भारत पर्व में लाइटिंग के साथ पर्यटकों ने हजारों सेल्फी एवं फोटो अपने मोबाइल में संजोए हैं। लाइटिंग से सजाई गई हर थीम अपने भीतर कोई संदेश समेटे है। कहीं राष्ट्रीय एकता

का प्रतिबिंब है, तो कहीं प्रकृति के प्रति प्रेम झलकता है। नर्मदा नदी की निर्मल धारा समान इस पर्व के उत्सव में देश के विभिन्न राज्यों की लोककला, लोकसंगीत, हस्तकला तथा भोजन की रसधारा बहती दिखाई देती है। हर राज्य ने अपने परंपरागत वेशभूषा तथा कला द्वारा देश की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रस्तुत किया है, जिससे एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना जीवंत हो उठी है। इस भावना को उजागर करने के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से भारत पर्व का भव्य उत्सव नर्मदा नदी के पवित्र तट पर मनाया जा रहा है।

आज के डिजिटल युग में लाइट फेस्टिवल जैसे प्रसंग सेल्फी कल्चर का हिस्सा बन गए हैं, जहाँ हर फोटो पर्यटकों को प्रकाश, आनंद तथा भारतीय संस्कृति की एक नई कहानी कहती है।

प्रकाश पर्व पैवेलियन में 5 प्रकार की एलईडी लाइटिंग टेक्नोलॉजी द्वारा डेकोरेटिव सुशोभन किया गया

एकता प्रकाश पर्व पैवेलियन में एलईडी लाइट्स, आरजीबी एलईडी नियोन फ्लेक्स स्ट्रिप लाइट्स, कलरफुल लेसर प्रोजेक्शन लाइट्स, स्मार्ट सिंक्रोनाइज्ड लाइट्स, सोलर पावर्ड लाइटिंग से रजवाड़ा शैली के आर्किटेक्चर में देखने को मिल रही फूलों की नाजुक कढ़ाई, स्वर्ण अलंकार, क्लासिकल आकारों की लाइटिंग की कृतियाँ एकता द्वार से लेकर स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक के सात किलोमीटर के क्षेत्र की स्ट्रीट लाइट, गेंट्री मोटिफ्स, सरकारी भवन, पर्यटन आकर्षण, सर्किट हाउस, एकता मॉल, एडमिन बिल्डिंग तथा मुख्य मार्ग पर स्थित पेड़ विभिन्न लिटिंग डेकोरेशन से सुशोभित किए गए हैं।

मुख्य मार्ग से वैली ऑफ फ्लावर्स तक के 530 मीटर के मार्ग में सीलिंग लाइट्स, विभिन्न प्रकार के लाइटिंग आर्टिकल्स तथा थीम आधारित सेल्फी पॉइंट्स के साथ फोट बूथ्स आकाशगंगा की झाँकी देती दिखाई देती है। इसके साथ इसरो के मिशन चंद्रयान, ऑपरेशन सिंदूर की थीम, पक्षी, प्राणी, कलात्मक रूप, पेड़, फूल, धार्मिक चिह्न, ग्रह तथा सौरमंडल के रूप में आध्यात्मिक भारत की अद्भुत संकल्पनाओं को प्रकाश के रूप में व्यक्त किया गया है। वैली ऑफ फ्लावर्स पैवेलियन में 140 मीटर लंबे वॉक-वे को ग्लो टनल में विभिन्न थीम आधारित कलरफुल लाइटिंग से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, जंगल सफारी, कैक्टस गार्डन, बटरफ्लाई गार्डन, उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा, सोमनाथ, द्वारका, डाकोर जैसे विभिन्न धार्मिक स्थलों की थीम से कृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं। सरदार सरोवर बांध में विशेष डिडाइन किए गए डाइनामिक लाइट एंड साउंड तथा सरदार पटेल की प्रतिमा पर शाम को लेसर शो का आयोजन किया गया है, जिसे देखने के लिए पर्यटकों में विशेष आकर्षण देखने को मिलता है।

बेतिया रेलवे स्टेशन को मिलेगा एयरपोर्ट जैसा लुक, बनेगा शॉपिंग मॉल और आधुनिक सुविधाओं वाला नया भवन

(जीएनएस)। बेतिया। बेतिया शहर के रेलवे स्टेशन का स्वरूप अब पूरी तरह बदलने जा रहा है। रेलवे विभाग ने स्टेशन के लिए एक आधुनिक और भव्य भवन बनाने की योजना बनाई है, जो एयरपोर्ट जैसी सुविधाओं और डिजाइन के साथ तैयार होगा। इस नई परियोजना के तहत स्टेशन के दोनों ओर से प्रवेश द्वार होंगे, और लगभग डेढ़ सौ मीटर लंबाई में बहुमंजिला भवन का निर्माण किया जाएगा। इस भवन में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए वेटिंग हॉल, आधुनिक इंतजाम और सुविधाजनक प्रवेश व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

प्रोजेक्ट मैनेजर और इंजीनियर सैयद शाहबाद शमीम ने बताया कि बानुछापर की ओर से बनने वाला स्टेशन क्षेत्र यात्रियों के लिए पूरी तरह सुसज्जित होगा। रक्सौल की ओर बनने वाले हिस्से को भी आधुनिक राज भवन जैसा स्वरूप दिया जाएगा। नई बहुमंजिला इमारत में शॉपिंग मॉल, सिनेमा हॉल और अन्य व्यावसायिक सुविधाएं शामिल होंगी। इसका उद्देश्य न केवल स्टेशन को आकर्षक बनाना है, बल्कि यात्रियों और पर्यटकों के लिए सुविधाजनक और आरामदायक माहौल प्रदान करना भी है।

शॉपिंग मॉल में विशेष रूप से क्षेत्रीय निर्मित वस्तुओं की बिक्री की जाएगी, जिससे स्थानीय कारीगरों और व्यवसायियों को बढ़ावा मिलेगा। यह पहल स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के साथ-साथ पर्यटकों के लिए खरीदारी की सुविधाएं भी उपलब्ध कराएगी। मॉल में आधुनिक स्टोर, आकर्षक दुकानें और मनोरंजन सुविधाओं का प्रावधान किया जाएगा, जिससे आने वाले यात्री इसे एयरपोर्ट जैसी सुविधा के रूप में महसूस कर सकें।

बेतिया रेलवे स्टेशन का यह नया रूप न केवल शहर के निवासियों के लिए, बल्कि आसपास के जिलों और क्षेत्रों के यात्रियों के लिए भी महत्वपूर्ण साबित होगा। यात्रियों को प्रवेश करते ही वेटिंग हॉल और डबल हाइड्रेट छत के साथ आरामदायक वातावरण मिलेगा, जबकि स्टेशन की सुरक्षा और निगरानी व्यवस्था को भी आधुनिक तकनीक के साथ मजबूत किया जाएगा।

इस प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत 50 करोड़ रुपये है और इसे दोनों ओर से बनाए जाने वाले भवनों के साथ पूरा किया जाएगा। परियोजना के पूर्ण होने के बाद बेतिया रेलवे स्टेशन न केवल यात्रियों के लिए आधुनिक और सुविधाजनक बन जाएगा, बल्कि शहर के लिए एक नई पहचान भी बनेगा। स्टेशन में आने वाले लोगों को अब यह महसूस होगा कि वे किसी एयरपोर्ट में प्रवेश कर रहे हैं, जहां सुविधा, सुरक्षा और मनोरंजन सभी का ध्यान रखा गया है।

नई बहुमंजिला इमारत और शॉपिंग मॉल के निर्माण से बेतिया रेलवे स्टेशन केवल यात्रा का केंद्र नहीं रहेगा, बल्कि यह शहर की संस्कृति और व्यापारिक गतिविधियों का भी एक केंद्र बन जाएगा। स्थानीय उत्पाद, आधुनिक शॉपिंग सुविधाएं और आरामदायक माहौल, यह सभी पहल यात्रियों और शहरवासियों दोनों के लिए लाभकारी साबित होंगी।

छत्तीसगढ़ के जुगाड़ गांव में 20 साल से अंधेरा, पुलिस थाने में बिजली चमकी , बच्चे दीयों की रोशनी में लिख रहे अपना भविष्य

(जीएनएस)। गरियाबंद। आधुनिक भारत की चकाचौंध भरी रफ्तार के बीच एक ऐसा गांव भी है, जहां विकास की रोशनी आज तक नहीं पहुंची। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले की मैनपुर तहसील से लगभग 70 किलोमीटर दूर स्थित वनांचल ग्राम जुगाड़ पिछले बीस वर्षों से बिजली का मुंह देखने को तरस रहा है। विडंबना यह है कि गांव से कुछ ही दूरी पर स्थित पयलीखड़ पुलिस थाना 24 घंटे बिजली से जगमगाता है, जबकि उसी क्षेत्र के ग्रामीण अंधेरे में अपनी जिंदगी काट रहे हैं।

70 मकानों और लगभग 750 लोगों की आबादी वाला यह छोटा-सा गांव आज भी मिट्टी के तेल के दीयों और लालटेन के सहारे जी रहा है। यहां के बच्चे दीयों की टिमटिमाती लौ में पढ़ाई करते हैं, महिलाएं रसोई का काम अंधेरे में करती हैं और रात के समय जंगली जानवरों का डर हर वक्त बना रहता है। मोबाइल चार्ज करने, पंखा चलाने या किसी भी आधुनिक सुविधा का उपयोग करना इस गांव के लोगों के लिए सपने जैसा है।

ग्रामीणों ने बताया कि पिछले दो दशकों में कई बार अधिकारियों से लेकर जनप्रतिनिधियों तक गुहार लगाई गई, पर अब तक बिजली का ट्रांसफार्मर गांव में नहीं लगाया गया। आदिवासी युवा टेकाम नागवंशी कहते हैं, "संविधान में सबको समान अधिकार और गरिमा के साथ जीवन जीने का हक है, लेकिन जुगाड़ जैसे गांवों में यह अधिकार केवल कागज़ों में ही दिखाई देता है। बिजली न मिलना हमारे मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है।"

रायपुर निवासी सामाजिक कार्यकर्ता बिबेक अग्रवाल ने तो इस मामले को सीधे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु तक पहुंचाया है। उन्होंने अपनी शिकायत में उल्लेख किया है कि मैनपुर विकासखंड के ही पड़ोसी गांव उदयंती में नियमित बिजली आपूर्ति होती है, लेकिन जुगाड़ गांव अब भी अंधेरे में डूबा है। उन्होंने राष्ट्रपति से अपील की है कि यहां शीघ्र ट्रांसफार्मर और बिजली व्यवस्था स्थापित कराई जाए ताकि ग्रामीणों को इस अमानवीय स्थिति से राहत मिल सके। गौरतलब है कि वर्ष 2007 में इस गांव में वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में सौर ऊर्जा से बिजली की शुरुआत की गई थी, लेकिन बीते दो वर्षों से वह प्रणाली भी खराब पड़ी है। अब हालात यह हैं कि गांववाले रात में अंधेरे में ही जीवन जीने को विवश हैं। ग्रामीण बताते हैं कि सौर पैनल और बैटरी लंबे समय से खराब पड़े हैं, पर किसी विभाग ने अब तक मरम्मत की जहमत नहीं उठाई।

जुगाड़ और उसके आसपास के गांव उदंती-सीतानदी टाइगर रिजर्व क्षेत्र में आते हैं। यहां के लोग न केवल हाथियों के हमलों से परेशान हैं, बल्कि प्रशासनिक उपेक्षा और सुविधाओं की कमी से भी त्रस्त हैं। कुछ महीने पहले गांव के ही निवासी जंगल सिंह की हाथी के हमले में मौत हो गई थी। उसके बाद भी क्षेत्र में सुरक्षा और बिजली जैसी बुनियादी जरूरतों पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

ग्राम पंचायत तौरेंगा-जुगाड़ की सरपंच सोहन्तीन सोरी कहती हैं, "हमारा पूरा जीवन अंधेरे में बीत गया। हम सरकार से सिर्फ इतनी गुहार लगाते हैं कि हमारे गांव में भी बिजली पहुंचे ताकि हमारे बच्चों का भविष्य उजाले में लिखा जा सके।"

यह विडंबना है कि छत्तीसगढ़ की स्थापना को 25 वर्ष और देश की आज़ादी को 78 वर्ष हो चुके हैं, पर आज भी राज्य के कुछ गांव 17वीं सदी के अंधेरे में जी रहे हैं। जब राजधानी के महलों से लेकर थानों तक बिजली की रौशनी कभी नहीं बुझती, तब जुगाड़ जैसे गांव यह सवाल पूछते हैं — क्या विकास केवल शहरों के लिए है, और क्या गांवों के बच्चे आज भी दीयों की लौ में अपना भविष्य लिखते रहेंगे?

11-12 नवंबर को 3 घंटे के लिए रांधेजा स्थित रेलवे फाटक नं. 13 और 15 सड़क यातायात हेतु बंद रहेगा

(जीएनएस)। खंडवा। मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में धर्म, आस्था और व्यक्तिगत निर्णय का एक अनोखा उदाहरण देखने को मिला जब आमिर खान नामक युवक ने स्वेच्छा से इस्लाम धर्म छोड़कर सनातन हिंदू धर्म अपनाया। इस प्रक्रिया का आयोजन खंडवा के अतिप्राचीन महादेवगढ़ मंदिर परिसर में वैदिक रीति-रिवाजों के अनुसार किया गया। आमिर खान ने मंदिर समिति के सामने अपनी इच्छा जताई कि वह सनातन धर्म में लौटना चाहते हैं। उनके इस निर्णय का सम्मान करते हुए मंदिर के पुजारियों ने सबसे पहले उन्हें पवित्र नदियों के जल से स्नान कराकर शुद्धिकरण कराया। इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार के बीच हवन संपन्न किया गया, जो हिंदू धर्म में शुद्धिकरण और नए जीवन की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। हवन और शुद्धिकरण के पश्चात आमिर खान का नाम बदलकर 'अंगद' रखा गया।

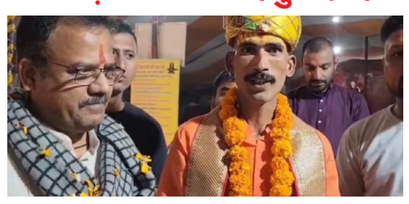

अंगद ने अपने निर्णय के पीछे कारण बताते हुए कहा कि बचपन से ही उन्हें सनातन धर्म की संस्कृति और जीवनशैली से गहरा लगाव था। उन्होंने बताया कि वे हिंदू समाज के बीच पले-बढ़े हैं और उनकी आस्था हमेशा से सनातन धर्म की ओर रही। अब अंगद ने महादेवगढ़ मंदिर में चौकीदार के रूप में सेवा करने और मंदिर की देखभाल करने की प्रतिज्ञा ली है। महादेवगढ़ मंदिर के प्रमुख अशोक पालीवाल ने इस अनुष्ठान की पुष्टि करते हुए कहा कि आमिर खान ने स्वयं अपनी पूरी इच्छा और सहमति से सनातन धर्म अपनाया। पालीवाल ने कहा, "यह घटना खंडवा में आस्था और व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता के एक उदाहरण के रूप में देखी जा रही है। अंगद ने महादेव को साक्षी मानकर धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया पूरी की है और अब वह मंदिर की सेवा में लगेंगे।" इस घटना ने खंडवा और आसपास के क्षेत्रों में चर्चा का विषय बना दिया है। स्थानीय लोग इसे एक सकारात्मक उदाहरण के रूप में देख रहे हैं, जहां किसी व्यक्ति ने अपनी आस्था के अनुरूप जीवन का मार्ग चुना और धार्मिक स्वतंत्रता का पालन किया। अंगद का यह कदम धर्म, संस्कृति और व्यक्तिगत चुनाव की स्वतंत्रता को उजागर करता है और यह संदेश देता है कि आस्था और सेवा हमेशा व्यक्तिगत निर्णय से जुड़ी होती है।

11-12 नवंबर को 3 घंटे के लिए रांधेजा स्थित रेलवे फाटक नं. 13 और 15 सड़क यातायात हेतु बंद रहेगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मंडल के गांधीनगर हाईवे पर रांधेजा स्थित रेलवे फाटक नं. 13 और रेलवे फाटक नं. 15 दिनांक 11-12 नवंबर 2025 को 3 घंटे के लिए सड़क यातायात हेतु बंद रहेगा। आदरज मोटी-विजापुर रेलवे लाइन गेज परिवर्तन परियोजना के अंतर्गत प्रस्तावित मशीन टेंपिंग कार्य (MTT) हेतु गांधीनगर हाईवे से रूपाल के बीच रांधेजा स्थित रेलवे क्रॉसिंग नं. 13 दिनांक 11 नवंबर 2025 को 22.00 बजे से 12 नवंबर 2025 को 01.00 बजे तक 3 घंटे के लिए बंद रहेगा तथा गांधीनगर हाईवे से मानसा के बीच रांधेजा स्थित रेलवे क्रॉसिंग नं. 15 दिनांक 12 नवंबर 2025 को रात्रि 01.00 बजे से 04.00 बजे तक 3 घंटे के लिए सड़क यातायात हेतु बंद रहेगा

देश की सीमाओं से परे फैला 58 करोड़ का डिजिटल अरेस्ट घोटाला, हांगकांग-चीन-इंडोनेशिया से जुड़ी मनी ट्रेल ने खोले अंतरराष्ट्रीय ठगी के रहस्य

(जीएनएस)। मुंबई। देश में साइबर अपराध का नया और सबसे खतरनाक चेहरा अब सामने आया है। मुंबई के 58 करोड़ रुपये के डिजिटल अरेस्ट घोटाले ने न केवल भारत के साइबर सुरक्षा तंत्र को झकझोर दिया है, बल्कि यह भी उजागर कर दिया है कि कैसे विदेशी ठग अब भारतीय नागरिकों को निशाना बना रहे हैं। महाराष्ट्र साइबर पुलिस की ताजा जांच में यह खुलासा हुआ है कि इस धोखाधड़ी का नेटवर्क केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि इसका गहरा संबंध हांगकांग, चीन और इंडोनेशिया जैसे देशों से है। जांच में सामने आया है कि ठगी से हासिल की गई भारी रकम को क्रिप्टोकरेंसी के माध्यम से विदेशी खातों में ट्रांसफर किया गया, ताकि पैसे की आवाजाही का कोई रिकॉर्ड न बचे। यह मामला तब सामने आया जब मुंबई में रहने वाले 72 वर्षीय एक प्रतिष्ठित व्यापारी ने साइबर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। उनके अनुसार, उन्हें एक दिन फोन आया जिसमें कॉलर ने खुद को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआई का अधिकारी बताया। कॉल पर मौजूद लोगों ने व्यापारी पर मनी लॉन्ड्रिंग और

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय अपराधों में शामिल होने का झूठा आरोप लगाया। घबराए हुए व्यापारी को "जांच में सहयोग" करने का डर दिखाया गया और उन्हें वीडियो कॉल पर कई घंटों तक बंधक की तरह रखा गया। उस कॉल में नकली सरकारी पहचान पत्र दिखाए गए और झूठे केस की फाइलें प्रस्तुत की गईं, जिससे व्यापारी को यह विश्वास हो गया कि वह वाकई किसी गंभीर कानूनी मुसीबत में है।

इसके बाद आरोपी ठगों ने व्यापारी से कहा कि यदि वे निर्दोष हैं तो जांच एजेंसी को अपने बैंक खाते का सत्यापन करवाना होगा। इस बहाने उन्होंने व्यापारी को धीरे-धीरे उसके अकाउंट से 58 करोड़ रुपये ट्रांसफर करने के लिए उकसाया। जैसे ही रकम ट्रांसफर हुई, वीडियो कॉल कट गया और ठगों ने सारी रकम डिजिटल चैनलों के जरिये देश से बाहर भेज दी।

पुलिस की जांच में यह भी खुलासा हुआ है कि इस रकम को पहले भारत के विभिन्न बैंक खातों में भेजा गया, जहां से इसे तुरंत क्रिप्टोकरेंसी में बदल दिया गया। इसके बाद वह रकम हांगकांग, चीन और इंडोनेशिया स्थित डिजिटल वॉलेट्स में ट्रांसफर कर दी गई। जांचकर्ताओं ने बताया कि हर ट्रांजैक्शन के बाद क्रिप्टो को कई अलग-अलग वॉलेट्स में भेजा जाता था, जिससे उसका ट्रैक करना लगभग नामुमकिन हो जाता था। इस तकनीक का इस्तेमाल करते हुए ठगों ने एक साल से भी अधिक समय तक पूरे भारत में सैकड़ों लोगों को चूना लगाया।

अधिकारियों ने बताया कि यह नेटवर्क बेहद संगठित तरीके से काम करता था। ठगी में शामिल गिरोह कमीशन बेस्ड बैंक खातों का इस्तेमाल करता था, जिन्हें "कलेक्शन पॉइंट" कहा जाता था। इन खातों को फर्जी पहचान पत्रों के जरिए खोला गया था और खाताधारकों को हर ट्रांजैक्शन पर मोटा कमीशन दिया जाता था। इन खातों में पैसे पहुंचते ही उन्हें मिनटों में विदेशी क्रिप्टो वॉलेट्स में बदल दिया जाता था। इस वजह से किसी भी बैंक या एजेंसी के लिए तुरंत कार्रवाई कर पाना मुश्किल हो जाता था। अब तक महाराष्ट्र साइबर पुलिस ने इस मामले में 26 आरोपियों को गिरफ्तार किया है और दर्जनों बैंक खातों को फ्रीज कर दिया गया है। इसके अलावा, विदेशी एजेंसियों को भी पत्र भेजे गए हैं ताकि क्रिप्टो वॉलेट्स और ट्रांजैक्शन डेटा तक पहुंच हासिल की जा सके। जांचकर्ताओं का अनुमान है कि यह मामला अकेला नहीं है, बल्कि यह एक अंतरराष्ट्रीय गिरोह का हिस्सा है जो अब तक 2,000 करोड़ रुपये से अधिक की ऑनलाइन ठगी कर चुका है।

साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि "डिजिटल अरेस्ट" नाम का यह नया तरीका अपराधियों के लिए अत्यंत लाभदायक बन गया है, क्योंकि इसमें पीड़ित को बिना किसी शारीरिक संपर्क के मानसिक रूप से बंधक बना लिया जाता है। कॉल पर डर, धमकी और फर्जी कानूनी प्रक्रिया दिखाकर अपराधी धीरे-धीरे व्यक्ति की पूरी संपत्ति पर नियंत्रण कर लेते हैं। पुलिस ने जनता को आगाह किया है कि कोई भी व्यक्ति यदि खुद को सरकारी अधिकारी बताकर फोन करे और बैंक विवरण या भुगतान की मांग करे, तो उसे तुरंत नजरअंदाज करें और नजदीकी साइबर थाने में शिकायत दर्ज कराएं। जांच एजेंसियों का कहना है कि यह केवल एक साइबर ठगी नहीं बल्कि भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर खतरा है, जिसने दिखा दिया है कि अपराध अब सीमाओं से परे जा चुका है — और अपराधी अब एक क्लिक से करोड़ों रुपये पार कर रहे हैं।

भारत की रक्षा शक्ति ने छुआ नया शिखर – आत्मनिर्भरता के पथ पर 1.51 लाख करोड़ की ऐतिहासिक उपलब्धि

(जीएनएस)। नई दिल्ली के रक्षा मंत्रालय परिसर में उस समय गर्व का वातावरण था जब रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यह घोषणा की कि भारत का कुल रक्षा उत्पादन वित्त वर्ष 2024-25 में 1.51 लाख करोड़ रुपये के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। यह उपलब्धि न केवल भारत के रक्षा उद्योग की अभूतपूर्व प्रगति का संकेत है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि देश अब आत्मनिर्भरता की दिशा में ठोस और निर्णायक कदम उठा चुका है। यह पहली बार है जब भारत ने इतने बड़े स्तर पर रक्षा उत्पादन किया है, जिसमें सरकारी रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (डीपीएसयू) का योगदान 71.6 प्रतिशत तक पहुंच गया है।

राजनाथ सिंह ने नौरोजी नगर स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में डीपीएसयू भवन का उद्घाटन करते हुए कहा कि "यह उपलब्धि उन सभी भारतीयों की है जो देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए रात-दिन प्रयासरत हैं। हमारे वैज्ञानिक, इंजीनियर, श्रमिक और रक्षा विशेषज्ञ आज भारत को एक आत्मनिर्भर शक्ति बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं।" उन्होंने इस अवसर पर चार प्रमुख उपक्रमों — म्यूनिशंस इंडिया लिमिटेड (एमआईएल), आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड (एवीएनएल), इंडिया ऑप्टेल लिमिटेड (आईओएल) और हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल) — को मिनी रत्न (श्रेणी-I) का दर्जा देने की घोषणा की। इस निर्णय से इन संस्थानों को अधिक वित्तीय और प्रशासनिक स्वायत्तता मिलेगी, जिससे वे उत्पादन, अनुसंधान और निर्यात के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू सकेंगे।

भारत के रक्षा उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ रक्षा निर्यात के क्षेत्र में भी देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है। अब भारत का कुल रक्षा निर्यात 6,695 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। इसका अर्थ यह है कि अब भारत केवल अपनी रक्षा जरूरतों को पूरा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के अनेक देशों को अपने स्वदेशी हथियार, उपकरण और रक्षा प्रणालियाँ निर्यात कर रहा है। राजनाथ सिंह ने कहा कि "अब विदेशी सेनाएँ 'मेड इन इंडिया' रक्षा प्रणालियों को अपनाने लगी हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत की तकनीक और उत्पादन क्षमता को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिल रही है।" उन्होंने बताया कि भारतीय रक्षा उपक्रमों ने हाल ही में 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे अभियानों में अपनी दक्षता और विश्वसनीयता का शानदार प्रदर्शन किया है, जिसने भारत की छवि को एक भरोसेमंद रक्षा सहयोगी के रूप में स्थापित किया है।

बैठक में रक्षा मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि देश की आत्मनिर्भरता केवल उत्पादन में वृद्धि से नहीं, बल्कि तकनीकी नवाचार और रणनीतिक सुधारों से भी जुड़ी है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2021 में जब आयुध निर्माण बोर्ड को सात नए डीपीएसयू में परिवर्तित किया गया था, तब से इन संस्थानों ने अद्भुत प्रगति की है। आज वे न केवल पारंपरिक हथियार बना रहे हैं, बल्कि अत्याधुनिक रॉकेट, मिसाइल सिस्टम, रडार, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित रक्षा उपकरणों के निर्माण में भी अग्रणी बन चुके हैं।

यह उपलब्धि भारत के लिए केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। वर्षों तक भारत को अपनी रक्षा जरूरतों के लिए विदेशी देशों पर निर्भर रहना पड़ता था। अब भारत ने यह साबित कर दिया है कि वह अपनी सीमाओं की रक्षा स्वयं करने में सक्षम है। रक्षा मंत्री ने कहा कि "हमारा लक्ष्य केवल आत्मनिर्भर भारत नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी भारत बनाना है — ऐसा भारत जो दुनिया की शांति और स्थिरता में अपनी भूमिका निभा सके।"

भारत की रक्षा उत्पादन क्षमता में यह वृद्धि उन असंख्य गुमनाम नायकों के परिश्रम का परिणाम है जो प्रयोगशालाओं, कारखानों और रक्षा संयंत्रों में दिन-रात काम कर रहे हैं। यह उपलब्धि भारत की औद्योगिक आत्मा का प्रतिबिंब है — वह आत्मा जो हर परिस्थिति में आगे बढ़ने का साहस रखती है।

बंगाल में मतदाता सूची के डर से बुजुर्ग की मौत, परिवार ने SIR प्रक्रिया को जिम्मेदार बताया

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में 70 वर्षीय श्यामल कुमार साहा की सोमवार को दुखद मौत हो गई, और उनके परिवार ने आरोप लगाया कि यह मृत्यु राज्य में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) से उत्पन्न तनाव और चिंता के कारण हुई। श्यामल ताहिरपुर थानाक्षेत्र के कृष्णचकपुर मंडलपारा के रहने वाले थे और स्थानीय फेरीवाले के तौर पर अपना जीवन यापन करते थे। पुलिस ने बताया कि श्यामल के परिवार का कहना है कि 2002 की मतदाता सूची में उनका नाम नहीं होने की जानकारी मिलने के बाद से ही वह अत्यधिक चिंतित रहते थे। उनके पास सभी वैध दस्तावेज मौजूद थे, जिसमें मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड, पैन कार्ड और संपत्ति के कागजात शामिल थे। बावजूद इसके, SIR की घोषणा के बाद से उन्हें लगातार डर सताने लगा था कि कहीं उन्हें मतदाता सूची से बाहर न कर दिया जाए। इस चिंता के कारण श्यामल ने धीरे-धीरे खाना-पीना छोड़ दिया और मानसिक रूप से परेशान रहने लगे।

श्यामल की पत्नी ने बताया कि उनका पति लगातार तनाव और भय में रहते थे। वह रोजमर्रा के कामकाज में भी असहज महसूस करते थे और इस चिंता ने उनके स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित किया। परिवार का कहना है कि मृत्यु सीधे तौर पर SIR प्रक्रिया की घोषणा के कारण उत्पन्न मानसिक दबाव से जुड़ी हुई है।

स्थानीय राजनीतिक गतिविधियों ने भी इस मामले में तूल पकड़ लिया है। तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेताओं और पंचायत सदस्यों ने श्यामल के परिवार से मुलाकात की और परिवार के दुख में शामिल हुए। पार्टी ने निर्वाचन आयोग पर आरोप लगाया कि SIR की घोषणा और मतदाता सूची से बाहर किए जाने के डर ने लोगों के जीवन पर गंभीर असर डाला है। पार्टी का कहना है कि प्रक्रिया की घोषणा ने कई बुजुर्ग और कमजोर वर्गों में घबराहट पैदा कर दी है, जिससे मानसिक तनाव और चिंता की स्थिति पैदा हुई है।

वहीं भाजपा ने इस आरोप को राजनीति से प्रेरित बताते हुए खारिज किया है। भाजपा का कहना है कि मतदाता सूची का नियमित और पारदर्शी अद्यतन लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है और इसमें किसी तरह की राजनीतिक कटुता या डर नहीं है।

पुलिस ने बताया कि मृतक के परिवार की ओर से इस संबंध में अभी तक कोई आधिकारिक रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई गई है। साथ ही स्थानीय प्रशासन मामले की जांच कर रहा है और परिवार की स्थिति का आकलन कर रहा है।

यह घटना पश्चिम बंगाल में SIR प्रक्रिया की संवेदनशीलता और उससे उत्पन्न सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करती है। पिछले 23 वर्षों में यह पहला विशेष गहन पुनरीक्षण है, और इसकी घोषणा के बाद से राज्य में कई लोगों ने मतदाता सूची से बाहर किए जाने के डर के कारण कथित तौर पर तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना किया है। श्यामल कुमार साहा की दुखद मौत इस प्रक्रिया के सामाजिक और मानसिक असर को उजागर करती है और यह सवाल खड़ा करती है कि प्रशासन और निर्वाचन आयोग ऐसे संवेदनशील मामलों में किस प्रकार लोगों की सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित कर सकता है।